अंक-35
जुलाई-दिसंबर, 2024

टीएचडीसी
पहल
राजभाषा गृह पत्रिका

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने प्राप्त किया प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह से श्री नित्यानंद राय, गृह राज्य मंत्री एवं संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, श्री भर्तृहरि महताब की उपस्थिति में प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त करते हुए टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (वित्त), श्री सिपन कुमार गर्ग

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम्, नई दिल्ली में आयोजित किए गए हिंदी दिवस के भव्य समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2023–24 के लिए संस्थान में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार माननीय केंद्रीय गृहमंत्री, श्री अमित शाह के कर–कमलों से टीएचडीसी के निदेशक (वित्त), श्री सिपन कुमार गर्ग ने प्राप्त किया।

कारपोरेट कार्यालय में श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक) के साथ अधिकारियों व कर्मचारियों का पुरस्कार के साथ ग्रुप फोटोग्राफ

श्री सिपन कुमार गर्ग, निदेशक (वित्त) के साथ समारोह में उपस्थित अधिकारीगणों का ग्रुप फोटोग्राफ

समारोह में माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री नित्यानंद राय, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, श्री भर्तृहरि महताब, प्रख्यात कवि हरिओम पंवार, राजभाषा विभाग की सचिव, श्रीमती अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव, डॉ. श्रीमती मीनाक्षी जौली सहित अनेक गणमान्य विद्वान व्यक्ति उपस्थित थे। समारोह में हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां दर्ज करने वाले अनेक विद्वानों के साथ–साथ पूरे देश के केंद्र सरकार के मंत्रालयों/संस्थानों/कार्यालयों/स्वायत्तशासी निकायों के प्रमुख एवं विभिन्न समितियों के अध्यक्ष, राजभाषा अधिकारी एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

''आप जिस बदलाव को देखना चाहते हैं, तो खुद को उस बदलाव का हिस्सा बनाइए।'' – महात्मा गांधी

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) प्राप्त होने पर अधिकारियों ने जताया हर्ष टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड

राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

माननीय केंद्रीय गृहमंत्री, श्री अमित शाह जी के कर–कमलों से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2023–24 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) प्रदान किया जाना निगम की बड़ी उपलब्धियों में से एक है। इसके पीछे निगम के प्रत्येक अधिकारी व कर्मचारी की निगम में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। निगम के सभी कर्मचारी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

टीएचडीसी अपने विद्युत उत्पादन के मूल कार्य के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में भी अग्रणी भूमिका निभा रही है। राजभाषा के क्षेत्र में निगम की क्षमताओं को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने परखा है तथा हरिद्वार एवं टिहरी की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का दायित्व भी सौंपा हुआ है। निगम में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने के साथ ही टीएचडीसी के राजभाषा अधिकारी इन समितियों के सदस्य संस्थानों में भी राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में जुटे हुए हैं।

शैलेन्द्र सिंह
निदेशक (कार्मिक)

भूपेन्द्र गुप्ता
निदेशक (तकनीकी)

निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों को इसी मनोभाव से निरंतर अपने कार्य में जुटे रहना चाहिए ताकि भविष्य में निगम को इस प्रकार की उपलब्धियां प्राप्त होती रहें। इससे न केवल निगम के सभी यूनिट/कार्यालयों के कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के प्रति प्रोत्साहन मिलेगा, अपितु निगम में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी नित नए आयाम कायम होंगे।

यह पुरस्कार इस बात का प्रतीक है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अपने सभी संवैधानिक एवं सांविधिक दायित्वों का निर्वाह करने के लिए कटिबद्ध है। संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। निगम में राजभाषा हिंदी को पूर्ण रूप से स्थापित करने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

सिपन कुमार गर्ग
निदेशक (वित्त)

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार के अधिकारियों से प्राप्त बधाई संदेश

पंकज अग्रवाल, भा.प्र.से.
सचिव, भारत सरकार,
विद्युत मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन,
नई दिल्ली-110001

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का अ.शा. पत्र सं.- 12015/2/2018-हिंदी

श्री राजीव कुमार विश्नोई, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड – अपार हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय "टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड" को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिंदी दिवस समारोह 2024 के शुभारंभ पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम ('क' क्षेत्र) श्रेणी के अंतर्गत वर्ष 2023–24 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया है। इस उपलक्ष्य में मेरी तरफ से आपको तथा आपके उपक्रम के सभी कर्मचारियों व अधिकारियों को हार्दिक बधाई। **शुभकामनाओं सहित।**

धीरज कुमार श्रीवास्तव
मुख्य अभियंता
(प्रभारी राजभाषा)
भारत सरकार,
विद्युत मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन,
नई दिल्ली- 110001

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का पत्रांक सं.- 12015/2/2018-हिंदी

श्रीमान विश्नोई जी, अत्यंत गर्व का विषय है कि आपके कार्यालय 'टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड' को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिंदी दिवस समारोह 2024 के शुभारंभ पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम ('क' क्षेत्र) श्रेणी के अंतर्गत वर्ष 2023–24 के लिए 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

विद्युत मंत्रालय, पूरे देश को प्रकाशमय करने के साथ–साथ देशभर में स्थित अपने नियंत्रणाधीन कार्यालयों में राजभाषा हिंदी को भी अविरल गति प्रदान कर रहा है। आपके कार्यालय को मिले इस राजभाषा पुरस्कार से इस तथ्य की पुष्टि होती है। यह आपके उपक्रम द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रसार की प्रतिबद्धता का द्योतक है। इस पुरस्कार से विद्युत मंत्रालय प्रफुल्लित है।

मैं कामना करता हूँ कि आप भविष्य में भी इसी दिशा में अपने बेहतर निष्पादन से पुरस्कार प्राप्त करते रहे। **टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित होने पर पुन: बधाई।**

सुशील कुमार
सहायक निदेशक (राजभाषा)
भारत सरकार, विद्युत मंत्रालय
श्रम शक्ति भवन,
नई दिल्ली-110001

विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार का पत्रांक सं.- 12015/2/2018-हिंदी

सेवा में, श्री राजीव कुमार विश्नोई, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड

यह जानकर अत्यंत खुशी हुई है कि आपके उपक्रम 'टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड' को राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिंदी दिवस समारोह–2024 के शुभारंभ पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम ('क' क्षेत्र) श्रेणी के अंतर्गत वर्ष 2023–24 के लिए 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया है। राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु किए गए अभूतपूर्व योगदान के लिए प्राप्त इस सम्मान पर हार्दिक बधाई।

आपके उपक्रम को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार मिलने से राजभाषा हिंदी के प्रति आपकी वास्तविक रूचि और प्रतिबद्धता परिलक्षित हुई है। यद्यपि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करना सदैव एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है तथापि आपके नेतृत्व कौशल एवं राजभाषा हिंदी के प्रति अथाह प्रीति ने न केवल लक्ष्य प्राप्ति की है अपितु प्रतिष्ठित पुरस्कार भी टीएचडीसी की झोली में डाला है। हम सभी को कड़ी मेहनत करने एवं अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रेरित करने के लिए आपका साधुवाद। आशा है कि भविष्य में भी टीएचडीसी अपने बेहतर निष्पादन से पुरस्कार प्राप्त करता रहेगा।

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित होने पर 'टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड' को पुन: बधाई।

प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सर्वप्रथम मैं टीएचडीसी परिवार के सभी सदस्यों को बधाई देता हूं कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आज 14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस के अवसर पर 'टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड' को राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2023–24 के राजभाषा कीर्ति पुरस्कार हेतु 'क' क्षेत्र वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत किया जा रहा है। यह राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में निगम की बड़ी उपलब्धियों में से एक है और इसके पीछे निगम के प्रत्येक अधिकारी व कर्मचारी की राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने की प्रतिबद्धता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

हम निगम की इस उपलब्धि का उत्साह एवं जोश के साथ जश्न मनाएं और इस माह निगम के सभी कार्यालयों व यूनिटों में आयोजित किए जाने वाले हिंदी माह/पखवाड़ा/सप्ताह/दिवस के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करें। मेरा सभी यूनिट कार्यालय प्रमुखों/विभागाध्यक्षों से अनुरोध है कि अपना अधिकाधिक सरकारी काम–काज हिंदी में करते हुए अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें।

संविधान सभा के द्वारा 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप मे अंगीकार किया गया था, जिसकी स्मृति में प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है। हिंदी आम जनता की भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। हिंदी ने अपनी मौलिकता, सरलता और बोधगम्यता से भारतीय संस्कृति और साहित्य का सृजन किया है। हिंदी भाषा के माध्यम से ही हम सभी भारतवासी एक सूत्र में बंधे हुए हैं। हिंदी महज भाषा नहीं, बल्कि हमारे देश की पहचान है।

आइए, हम सब मिलकर यह भी संकल्प लें कि राजभाषा हिंदी के संबंध में, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने का सतत प्रयास करेंगे तथा अपने–अपने सरकारी काम–काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाते हुए राजभाषा कार्यान्वयन में अपनी ओर से गति प्रदान करेंगे। हम सभी के सतत प्रयासों से ही हिंदी को पूर्ण रूप से स्थापित किया जा सकता है।

जय हिंद!

(राजीव विश्नोई)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड

निदेशक (कार्मिक) का संदेश

प्रिय साथियों,

नववर्ष 2025 के मधुरिम अवसर पर प्रकाशित हो रहे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका **''पहल''** के 35 वें अंक के माध्यम से सर्वप्रथम मैं सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं तथा ईश्वर से आपके एवं आपके परिवार के सदस्यों के निरामय, खुशहाल एवं समृद्ध जीवन की कामना करता हूं।

विगत वर्ष निगम के लिए बहुत सारी उपलब्धियों भरा रहा। निगम के ऊर्जा उत्पादन की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज हुई। जिनके अंतर्गत 1320 मेगावाट की कोयले से प्रचालनीय खुर्जा एसटीपीपी की पहली यूनिट (660 मेगावाट) एवं देश की पहली पीएसपी टिहरी पीएसपी की पहली यूनिट (250 मेगावाट) को ग्रिड के साथ सिंक्रोनाइज कर दिया गया जिससे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अब देश की विद्युत उत्पादन क्षमता में अपना और अधिक योगदान देने में सक्षम हुई है। निगम आगे ऊर्जा क्षेत्र में अपने योगदान को निरंतर बढ़ाने के लिए तेजी से कार्य कर रहा है।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रत्येक क्षेत्र में बढ़–चढ़ कर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वहन कर रही है। राजभाषा के क्षेत्र में भी टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अग्रणी भूमिका निभा रही है। जिसे देखते हुए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग ने वर्ष 2023–24 के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसके साथ ही टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार द्वारा जनवरी, 2025 में आयोजित की जाने वाली अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रथम नराकास राजभाषा वैजयंती शील्ड से पुरस्कृत किए जाने की घोषणा की गई है। इन उपलब्धियों के लिए मैं टीएचडीसी के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बहुत–बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं।

भाषा किसी राष्ट्र की संस्कृति की पोषक है और हम अपनी संस्कृति भावी पीढ़ियों को हस्तांतरित करते हैं। हिंदी भारतीय भाषाओं की आत्मा है। हिंदी ने सभी भारतीय भाषाओं को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है। किसी भी भाषा के विकास में उस देश के जनमानस का विकास अंतर्निहित होता है। अपनी भाषा का सम्मान करना हमारा परम कर्तव्य है। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं विद्युत मंत्रालय के राजभाषा विषयक सभी दिशा–निर्देशों का पूर्ण अनुपालन तो किया ही जा रहा है, साथ ही निगम अपने स्तर पर भी हिंदी के उत्थान एवं प्रचार–प्रसार के लिए स्वतंत्र रुप से अनेक कार्यक्रम एवं गतिविधियों का आयोजन कर लोगों को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने के लिए कृत संकल्प है।

इस पत्रिका में विभिन्न समसामायिक विषयों पर महत्वपूर्ण लेख, कविता, कहानी एवं जानकारी प्रकाशित की जाती है, जो कि पठनीय एवं सारगर्भित होती है। मैं पत्रिका से जुड़े लेखकों, संपादक मंडल एवं पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी साथियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं तथा पुनः नववर्ष 2025 में आप सबके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूं। ''जीतेंगे हम ये वादा करो, कोशिश हमेशा ज्यादा करो, किस्मत भी रूठे पर हिम्मत ना टूटे, मजबूत इतना इरादा करो।''

जय हिंद।

(शैलेन्द्र सिंह)

''अपना भविष्य बदलने के लिए मेहनत करो, भाग्य खुद बदल जाएगा।'' – डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक-35)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री शैलेन्द्र सिंह
निदेशक (कार्मिक)

मार्गदर्शक
डॉ. अमर नाथ त्रिपाठी
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
श्री एस.बी.प्रसाद
उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री टेलकीकर संतोष तुकाराम
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
श्री नरेश सिंह
सहायक अधिकारी (हिंदी)
श्रीमती हेमलता कौर
कनि. अधिकारी (हिंदी)

संपर्क सूत्र
संपादक
''पहल''
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम,
बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेल: pankajksharma@thdc.co.in

विषय सूची

लेख/प्रेरक प्रंसग/लघुकथा

1. संकल्प से सिद्धि 6
2. एक संकल्प बदल सकता है जिंदगी 7
3. ऊर्जा संरक्षण, हमारी जिम्मेदारी! 8
4. हिंदी की जीत 9
5. औद्योगिक इकाई में काम आने वाले औद्योगिक सुरक्षा उपकरण 10
6. सरस्वती नदी 11
7. बंड विकास मेलाः परंपरा, विकास, संवाद, और संस्कृति का अद्भुत संगम 13
8. उत्तराखण्ड के छोटा धाम, बद्रीनाथ व तृतीय केदार, तुंगनाथ धाम के दर्शन 15
9. अंधे की छड़ी 17
10. प्रतिष्ठित महासू देवता मंदिर, हनोल (देहरादून) 18
11. नीम/एजाडिरेक्टा इंडिका के उपयोग 20
12. कार्यालय में अधिकांशतः प्रयोग होने वाले अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय 21
13. कार्यालय में अधिकाशतः प्रयोग होने वाले वाक्यांश के हिंदी प्रयोग 23

कविताएं/क्षणिकाएं/विचार

14. टिहरी पीएसपी 25
15. नारी सशक्तिकरण 25
16. मन की भाषा हिंदी 26
17. हिंदी से हैं हिंदुस्तान 26
18. भेष तुम बदल दो 26
19. पर्यावरण 27
20. बीता कल 27
21. बेटी की विदाई 27
22. श्वेत वर्ण 28
23. खुद की सुनो 28

राजभाषा गतिविधियां

24. निगम में आयोजित हुई राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम 29
25. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 36
26. कारपोरेट कार्यालय में हिंदी हास्य व्यंग्य प्रतियोगिता का आयोजन 37
27. नराकास हरिद्वार की 38वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न 38
28. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की 27वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न 39
29. हास–परिहास 40

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

''यदि आप सभी गलतियों को एक ही बार में मिटा देंगे, तो आप स्वयं को भी खो देंगे।'' – रवीन्द्रनाथ टैगोर

संकल्प से सिद्धि

लेख

आशुतोष कुमार आनंद,
उप महाप्रबंधक (मा. सं.), ऋषिकेश

मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है, पर भाग्य पुरुषार्थ से बनता है और पुरुषार्थ कर्म एवं दृढ संकल्प से आता है। मनुष्य के अन्दर विद्यमान शक्ति को दृढ़ संकल्प और निर्मल मन से ही जागृत किया जा सकता है।

मन का स्वभाव तो चंचल है, वह हमेशा विकल्पों की तलाश में इधर–उधर भटकता रहता है। विकल्प कभी संकल्प को पूरा नहीं होने देते। दृढ़तापूर्वक किया गया निश्चय संकल्प कहलाता है और यही सफलता का पथप्रदर्शक है क्योंकि संकल्पित मन संशयरहित होकर अपने ध्येय से नहीं हटता। विकल्पों में मन भटकता रहता है जबकि संकल्प में मन स्थिर हो जाता है और व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है। मन को संयमित न कर पाना ही समस्त समस्याओं और दुःखों का मूल है। मन में केवल वही विचार लाएं जो आप होते हुए देखना चाहते हैं, क्योंकि विचार बीज हैं और घटनाएं उसके फल। प्रतिदिन हमारे मन में अनेक प्रकार के विचार आते रहते हैं, वह पूरे इसलिए नहीं हो पाते क्योंकि उन विचारों में दृढ़ संकल्प का अभाव रहता है। इच्छाएं अनंत हैं, सभी इच्छाएं संकल्प की सीमा का स्पर्श नहीं कर पाती, इसलिए प्रत्येक चाहने वाली वस्तु आपको नहीं मिलती।

अपने साधारण से भी जीवन में मनुष्य प्रत्येक दिन कोई न कोई संकल्प लेता ही रहता है। हमारे दैनिक क्रिया कलापों में भी एक संकल्प छुपा होता है। उदाहरण के लिए कि इस समय तक बिस्तर पर से उठ जाना चाहिए। दैनिक कार्यों से निवृत होकर स्नान करना चाहिए। पूजन करना चाहिए। उसके बाद कुछ खाना पीना चाहिए। जिसे हम सब रोज का नियम मानते हैं। स्वस्थ रहने के लिए वह एक प्रकार का संकल्प ही होता है। शास्त्रों के अनुसार संकल्प ही सृष्टि का कारण है, जैसे संकल्प होते हैं वैसे ही परिस्थितियों का सृजन होने लगता है। जब हमारा मन सच्चा और संकल्प पक्का होगा, तब हमारे भीतर सोई हुई ईश्वरीय शक्ति जागृत होकर सफलता का मार्ग प्रशस्त करती है। संकल्प कार्यसिद्धि की तरफ उठाया गया पहला कदम है।

जीवन संकल्पों से ही सधता है, भारतीय परंपरा में तो वैसे भी संकल्प की बहुत महत्ता है। संकल्प लेना सिर्फ धार्मिक

कर्मकांड नहीं बल्कि जीवन को प्रेरित दिशा–निर्देशित करने में संकल्पों का बहुत बड़ा महत्व है। अगर हमारे घर में भी कोई ईश्वरीय कार्य या आयोजन या कोई पूजा होती है तो सबसे पहले संकल्प लिया जाता है, बिना संकल्प के पूजा को भी फलित नहीं माना जाता। मंत्र–जप को व्रत संकल्प को प्रबल–प्रखर बनाने का एक सशक्त माध्यम माना गया है। अध्यात्म क्षेत्र में जितनी इसकी महत्ता उपयोगिता है उससे कोई कम भौतिक क्षेत्र में नहीं है। भौतिक जीवन को समृद्ध बनाने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है, किसी व्यक्ति की सफलता–विफलता का मुख्य हेतु अस्थिर और अव्यवस्थित चित वृत्तियां होती हैं। जो इन्हें संयमित कर लेता है अथवा शुभ–अशुभ भाव संकल्पों के आधार पर अच्छो को सुरक्षित रख बुरे को निकाल बाहर करता है जीवन में वही सफल हो पाता है।

निरंतर संकल्पवान बने रहने की स्थिति जीवन को निर्देशित करती है। भगवान श्रीराम की संकल्प सिद्धि को देखेंगे तो पायेंगे कि उनके संकल्प में जब प्रकृति की इतनी सारी शक्तियों का संयोजन हुआ कि वे इस पृथ्वी के महानिशाचर रावण का अंत कर सके। चूंकि संकल्प बहुत बड़ा था, उसका उद्देश्य बहुत ऊंचा और प्रभाव बहुत व्यापक था। एक संकल्पवान व्यक्ति अपने सच्चे निर्णय की सार्वजनिक घोषणा करता है। वह स्वयं के ऊपर समाज के दबाव को भी एक तरह से आमंत्रित करता है, ताकि उसका संकल्प कमजोर न पड़ने पाए, कहीं राह भटक न जाए।

जीवन संकल्पों से ही सधता है, किसी भी कार्य को करने से पहले कार्य करने का संकल्प प्रथम पड़ाव होता है, फिर उस संकल्प को सिद्ध करने के लिए प्रयास और पुरुषार्थ। यदि भावना के आवेश में आकर कोई संकल्प लिया जाता है, तो उसकी पूर्णता की संभावना न्यूनतम होती है। इसलिए संकल्प–सिद्धि का बड़ा सूत्र है कि यह विचारपूर्वक किया जाना चाहिए, अपनी क्षमता को देखकर और संपूर्ण स्थितियों का तथ्यपूर्ण ढंग से मूल्यांकन करके किया जाना चाहिए। अपने संकल्प को पूरा करने की बौद्धिक प्रक्रिया की जानकारी होनी चाहिए। ज्ञान तो हो गया, लेकिन यदि हमने उसके अनुकूल कर्म नहीं किया, तो अकेला ज्ञान कुछ नहीं कर पाएगा। चेतना की समर्पित स्थिति हमें सफल बनाती है, कोई भी कार्य करने से पहले उसका विचार मन में आता है फिर वही विचार संकल्प में परिणित हो जाता है, फिर वही संकल्प कार्यसिद्ध का रूप ले लेता है, संकल्प को सिद्ध करने के लिए मनुष्य हर कठिनाई हर मुश्किल को झेलता आगे बढ़ता है और यही दृढ संकल्प शक्ति उसके कार्य को सिद्ध करती है। सिर्फ संकल्प ही काफी नहीं है, कार्य को सिद्ध करने के लिए लगन और पुरुषार्थ भी जरुरी है। "जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू, मिलहिं सो तेहि नहीं कछु संदेहू" संकल्प सत्य हो तो, सिद्धि जरुर होती है, मन में दृढता हो तो कार्य सफल होते हैं, पर संकल्प का सही एवं शुद्ध होना भी उतना ही जरुरी है, अगर गलत संकल्प के साथ कार्य शुरू होता है तो उसके असफल होने के साथ खुद का नुकसान तय है। यही ईश्वर का न्याय है और ईश्वर का न्याय एक शाश्वत सत्य है।

शीघ्र ही एक वर्ष की अवधि खत्म होने वाली है एवं एक नूतन वर्ष का अभिनंदन किया जाएगा, नववर्ष आते ही नए संकल्पों की चर्चा की जाने लगती है, नयी योजनाएं बनाई जाएंगी, कोशिश होगी कि इस संकल्प से पीछे नहीं हटा जाये, पर यहाँ यह जरूरी है कि शुद्ध एवं सत्य संकल्पों के साथ नव वर्ष का प्रारंभ हो एवं हमारा संकल्प हमें सिद्धि की ओर ले जाये। यह वर्ष हमारे निगम के लिए भी श्रेयष्कर हो एवं निगम को चतुर्दिक सफलताओं की ओर अग्रेषित करे।

एक संकल्प बदल सकता है जिंदगी

सोशल मीडिया (ब्रह्मकुमारी मासिक पत्रिका ज्ञानमृत) से लिया गया है।

नरेश सिंह
सहायक अधिकारी–हिंदी, ऋषिकेश

एक व्यसनाधीन व्यक्ति को जब मैंने ईश्वरीय ज्ञान सुनाया और जीवन में बदलाव के बारे में चर्चा की तो उसने कहा, इतनी जल्दी जीवन थोड़े ही बदल सकता है? जन्म–जन्म के बुरे संस्कार हमारे अंदर भरे हुए हैं, उन्हें बदलने में बहुत समय लगेगा। बात उसकी ठीक थी लेकिन कभी–कभी जिंदगी को बदलने के लिए सिर्फ एक विचार ही काफी होता है जैसे कि मिट्टी की जिंदगी बदल गई कुम्हार का एक विचार बदलने से।

किसी गाँव में एक कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाया करता था। एक सुबह उसने बर्तन बनाने के लिए चाक के ऊपर मिट्टी रखी, चाक चलाया और फिर एकदम रोक दिया। मिट्टी बोली, कुम्हार क्यों रूक गया? (मिट्टी बोलती नहीं है पर यह कहानी है शिक्षा के लिए) कुम्हार बोला, मेरा विचार बदल गया। पहले मेरा विचार था कि मैं चिलम बनाऊंगा। अब मेरा विचार है कि मैं घड़ा बनाऊंगा। मिट्टी कहती है, कुम्हार, तेरा तो विचार बदल गया पर मेरा तो जीवन ही बदल गया। कुम्हार पूछता है कैसे? मिट्टी कहती है, कुम्हार, अगर तू मुझे चिलम बनाता तो मैं खुद भी आग में तपती और पीने वाले को भी तपाती। अब तू मुझे घड़ा बनायेगा तो मैं खुद भी शीतल रहूंगी और दूसरों को भी ठण्डक पहुँचाऊंगी। इस पूरे दृष्टांत में एक विचार बदलने का ही सारा खेल है। किसी ने कहा है, एक मिनट में जिंदगी नहीं बदली जा सकती। दूसरे ने जवाब दिया, एक मिनट तो छोड़ो, एक सेकंड में लिया गया दृढ़ फैसला जिंदगी बदल सकता है।

किसी तालाब में एक छोटी–सी भी वस्तु फेंकने से उसका वृत्त कहाँ तक जाता है, हम समझ सकते हैं। अगर माइक्रोस्कोप से देखेंगे तो पता पड़ेगा कि कितनी बड़ी जगह पर उसका असर होता है। यही हाल हर एक संकल्प का है। संकल्प = (सं+कल्प) अर्थात् एक संकल्प का असर आत्मा पर पूरा कल्प चलता है। संकल्प को हम बिना मतलब ही खर्च कर देते हैं, परंतु नहीं, जितनी इनकी बचत करेंगे उतने ही हम श्रेष्ठ और शक्तिशाली बनते जायेंगे।

ऊर्जा संरक्षण, हमारी जिम्मेदारी!

लेख

सिमरन शाहीन
सहायक प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)
अमेलिया कोल माइन, अमेलिया

अगर राष्ट्र को और समृद्ध बनाना है,
तो, हम सबको मिलकर ऊर्जा को बचाना है।

देश के विकास एवं तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की वजह से ऊर्जा की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। हम प्रतिदिन रोजमर्रा के कार्य के लिए ऊर्जा का उपयोग विभिन्न रूप में करते हैं। ऊर्जा की अप्रत्याशित खपत से ना केवल ऊर्जा आपूर्ति बल्कि भविष्य में ऊर्जा संकट की भी समस्या उत्पन्न होगी। क्योंकि मुख्यतः ऊर्जा की आपूर्ति परंपरागत ऊर्जा स्रोत कोयला, पेट्रोल, डीजल, गैस इत्यादि से की जा रही है। ऐसे में ऊर्जा संरक्षण एवं गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत की ओर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक हो गया है। ऊर्जा संरक्षण के द्वारा आने वाले ऊर्जा संकट से लड़ा जा सकता है।

सबसे पहले हमें जानना होगा कि ऊर्जा संरक्षण क्या है?

ऊर्जा का न्यूनतम उपयोग तथा अनावश्यक उपयोग में कमी, ऊर्जा संरक्षण कहलाता है। हमारे देश में ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने तथा लोगों को इसके प्रति जागरूक करने के लिए ब्यूरो ऑफ एनर्जी एफिशिएंसी (B.E.E.) के द्वारा राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस 14 दिसंबर को हर वर्ष मनाया जाता है।

ऊर्जा की खपत समझदारी से करना, सभी स्तरों की जिम्मेदारी है चाहे वह व्यक्तिगत हो, सामाजिक तौर पर हो या औद्योगिकी के स्तर पर हो, ऊर्जा का उचित उपयोग कर ऊर्जा संरक्षण निम्न प्रयासों द्वारा किया जा सकता है।

- अगर घरेलू या व्यक्तिगत स्तर पर बात करें तो ऊर्जा दक्ष उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए, बिजली उपकरणों के अनावश्यक प्रयोग से बचना चाहिए और सोलर पैनल का प्रयोग कर परम्परागत ऊर्जा पर हो रही निर्भरता को भी कम किया जा सकता है। सोलर

रूफ टॉप्स से घर की ऊर्जा आपूर्ति करने से ना केवल बिजली बिल में कमी आती है बल्कि पर्यावरण का भी बचाव होता है।

- सामाजिक व सामुदायिक स्तर की बात करें तो आवागमन हेतु सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करके ईंधन और ऊर्जा की खपत को कम करते हुए वायुमंडलीय प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है। सार्वजनिक स्थानों पर सड़कों, पार्कों एवं कार्यालयों में बिजली के उपयोग न होने की स्थिति में उपकरणों को बंद कर देना चाहिए, साथ ही साथ ऊर्जा संरक्षण के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को इसके महत्व के बारे में बताने का प्रयास करना चाहिए।

- औद्योगिकी स्तर पर ऊर्जा दक्ष उपकरणों व मशीनों का उपयोग करना चाहिए व इसके रख–रखाव व ऑप्टिमाइजेशन में भी सजगता होनी चाहिए जिससे की अनावश्यक ऊर्जा की खपत से बचा जा सकता है लेटेस्ट टेक्नोलॉजी का प्रयोग ना केवल प्रोसेस की दक्षता बढ़ाता है, बल्कि ऊर्जा खपत को भी कम करता है। नवीकरणीय ऊर्जा के प्रयोगों में बढ़ावा देते हुए ज़्यादा से ज़्यादा सौर ऊर्जा से चलने वाली लाइटों व बैटरी पॉवर सिस्टम का इस्तेमाल करना चाहिए, और स्मार्ट ग्रिड सिस्टम का प्रयोग करना चाहिए।

''क्रोध को प्रेम से, बुराई को अच्छाई से, और असत्य को सत्य से जीतना चाहिए।''– गौतम बुद्ध

ऊर्जा संरक्षण का महत्व

पर्यावरण की दृष्टि से

जैसा कि हम सबको पता है ऊर्जा के अत्यधिक अपव्यय से कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2), नाइट्रस ऑक्साइड (NO_x), और सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2) जैसी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है, जिससे ये गैसें पृथ्वी की सतह पर अधिक गर्मी को रोककर वैश्विक तापमान को बढ़ाती हैं तथा पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं। ऊर्जा संरक्षण के द्वारा ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी ला सकते हैं और वैश्विक तापमान को भी नियंत्रित कर सकते है इसके अलावा अक्षय ऊर्जा जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जैव ऊर्जा आदि का उपयोग कर जीवाश्म ईंधन के प्रति निर्भरता को भी कम किया जा सकता है, साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या को भी नियंत्रित करते हुए, पर्यावरण प्रदूषण को भी कम कर सकते हैं।

आर्थिक दृष्टि से

जैसे–जैसे जनसंख्या में वृद्धि हो रही है ऊर्जा की खपत उतनी ही तेजी से बढ़ रही है, ऊर्जा संरक्षण के द्वारा ऊर्जा की अपव्ययता को कम करके घरों, उद्योगों आदि में भी ऊर्जा की खपत को कम किया जा सकता है। ऊर्जा दक्ष उपकरणों का उपयोग कर बिजली की खपत में लगभग 20% से 30% तक की कमी ला सकते हैं। जिससे कि बिजली बिल में कमी के साथ–साथ आयातित ईंधन के व्यय में भी कमी आती है तथा नवीनीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग कर दूसरे देशों पर निर्भरता को भी कम किया जा सकता है।

सामाजिक और सामुदायिक दृष्टि से

ऊर्जा उत्पादन के दौरान विभिन्न हानिकारक तत्वों व गैस का उत्सर्जन होता है, जो कि सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, साथ ही विभिन्न प्रकार की बीमारियों को भी जन्म देता है। हानिकारक गैसें श्वसन तंत्र को प्रभावित करती हैं, जिससे फेफड़े और हृदय रोग की गंभीर समस्याएं उत्पन्न होती हैं। ऊर्जा संरक्षण द्वारा इन सभी समस्याओं को कम करके पर्यावरण को स्वच्छ बनाया जा सकता है।

अतः उपर्युक्त महत्वों व उपयोगिता को समझते हुए हमारी, ऊर्जा संरक्षण के प्रति सजगता एवं जागरूकता अनिवार्य हो गई है। ऊर्जा संरक्षण को अपनाने से हम न केवल आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं, बल्कि यह एक सतत और समृद्ध भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

हिंदी की जीत

लेख

सुरेश कुमार
उप अभियंता (तकनीकी), ऋषिकेश

आज के आज़ाद हिंदुस्तान में अगर हिंदी भाषा का प्रयोग नही हो रहा है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानों आज भी हमारा हिन्दुस्तान आज़ाद होने के पश्चात भी गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। जब हर प्रकार के आदान–प्रदान में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है तो यह भाषा अलग ही रूप में श्रृंगार लेकर उभरती है।

इसलिए प्रसिद्ध गांधीवादी नेता और कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. भोजराजू पट्टाभि सीता रमैया अपने सभी पत्रों पर हिंदी में ही पता लिखते थे। इस कारण से दक्षिण के डाकखाने वालों को बड़ी असुविधा होती थी। उन सबने उनको कहा कि आप अंग्रेजी में ही पत्रों पर पता लिखा करें ताकि डाक बांटने में आसानी हो।

डॉ. सीता रमैया ने उनसे कहा भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है। अतः मैं अपने पत्रों में तथा पत्र व्यवहार में हिंदी का ही प्रयोग करूंगा! डाकखाने वालों ने उनको धमकी दी कि यदि आप अपनी हरकतों सें बाज नही आये तो हम आपकी सारी चिट्ठियाँ डेडलेटर ऑफिस को भेज देंगे। डॉ. भोजराजू पट्टाभि सीता रमैया पर इस धमकी का कोई असर नही हुआ। दोनों के बीच काफी अर्से तक शीत युद्ध जारी रहा। अन्त में डाकखाने वाले झुक ही गये, मजबूरन उन्हें मछली पट्टणम के डाकखाने में एक हिंदी जानने वाले आदमी को रखना पड़ा। इस तरह हिंदी की जीत हुई।

औद्योगिक इकाई में काम आने वाले औद्योगिक सुरक्षा उपकरण

लेख

नीलेन्द्र बहुगुणा
कनि. अधिकारी, एस.जी.
चिकित्सालय, टिहरी

औद्योगिक इकाई में काम करने वाले कर्मचारियों की सुरक्षा का ध्यान रखना यह सरकार का पहला कर्तव्य है। उनकी सेहत का ध्यान रखना एवं उनकी जिंदगी खतरे में न हो, इसके लिए सुरक्षा उपकरणों का बहुत महत्व है। सुरक्षा उपकरणों ने कर्मचारियों के जीवन को सुखद बना दिया है।

औद्योगिक सुरक्षा उपकरण व्यक्ति को दुर्घटना या खतरे से बचाता है एवं दुर्घटना से होने वाले नुकसान को कम करता है, कुछ मुख्य औद्योगिक सुरक्षा उपकरण हियरिंग प्रोटेक्सन एंड आई प्रोटेक्शन, फेस प्रोटेक्शन, फाल प्रोटेक्शन, शोर नियंत्रण उपकरण, सेफ्टी अलार्म एंड वार्निंग आदि। इन सुरक्षा उपकरणों की विशेषता के कारण ये कर्मचारियों को दुर्घटना या खतरे से सुरक्षित रखते हैं जैसे कट रेजिस्टेंट ग्लब्ज शार्प आब्जेक्ट के साथ कार्य करते हुए ये दस्ताने पहने जाते हैं जो हाथ को चोट या कट जाने से बचाते हैं, इमरजेन्सी एस्केट ये वो सुरक्षा उपकरण है जो इमरजेन्सी कंडीशन में ऊँची इमारतों से लोगों को बाहर निकालने में सहायक होता है। हाइ परफॉरमेन्स फायर प्रोक्सीमिटी सूट एवं दस्ताने अत्यधिक ताप, आग भाप एवं गरम पानी से शरीर व हाथों की सुरक्षा करते हैं, इसमें अधिक फाइबर फैब्रिक के साथ ही हीट रेजिस्टेंट लाइनिंग का प्रयोग होता है जो 800 डिग्री सेल्सियस तक तापमान से भी सुरक्षा करते हैं। हियरिंग प्रोटेक्शन कारखानों में होने वाले अधिक शोर से यह उपकरण कान और कान के अन्य अंगो को क्षतिग्रस्त होने से बचाता है।

आई वीयर: यह एक तरह के सुरक्षा चश्में होते हैं जो आँखों को तेज रोशनी, धूप, मिट्टी, वेल्डिंग, गैसेज आदि से सुरक्षा करते हैं।

फेस शील्ड: यह चेहरे की गर्मी, धूल, मिट्टी, जीवाणु, खतरनाक केमिकल्स, किरणों से हर तरह से सुरक्षा करता है।

हेल्मेट: यह ऊपर से गिरने वाली सख्त चीजों से या अन्य किसी जगह की दुर्घटना से व्यक्ति के सिर की सुरक्षा करता है।

इसके अलावा हर कार्य क्षेत्र में अलग–अलग सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग आवश्यक है जैसे खदानों में सुरक्षा शूज, हेल्मेट, लाइट, इंडीकेटर लाइट, चिकित्सालय में दस्ताने, गाउन, मास्क आदि।

सुरक्षा अलार्म एवं वार्निंग: जो किसी संभवित दुर्घटना की तरफ इशारा करते हैं जिससे सब अलर्ट होकर बचाव आदि के लिए तैयार रहें और सुरक्षित स्थान पर जाने या लोगों को ले जाने की तैयारी करें। इसके अलावा रेजिस्टेट कपड़े एवं संकेत हेतु प्रयोग होने वाले लाइट वाले कलर्स जो संकेत के रूप में प्रयोग होते हैं और लोगों को दुर्घटनाओं से बचाते हैं। औद्योगिक इकाई को अग्नि सुरक्षित बनाने के लिए यंत्र लगाये जाते हैं। एक असेंबली प्वांईट बनाया जाता है जहाँ पर आग लगने के पश्चात सभी लोग जमा हो सके। हर स्थान पर धुंआ की पहचान करने वाले उपकरण लगाये जाते है, खराब होने पर तुरन्त बैटरी बदल दी जाती है।

अन्ततः देखा जाए तो सुरक्षा उपकरण कर्मचारियों के लिए वरदान है।

सरस्वती नदी

लेख

ममता गौड़
कनि. अधिकारी (हिंदी)
ऋषिकेश

सरस्वती नदी का नाम तो सभी ने सुना है लेकिन उसे किसी ने देखा नहीं। माना जाता है कि प्रयाग में गंगा, यमुना और सरस्वती का मिलन होता है, इसीलिए उसे त्रिवेणी संगम कहते हैं। लेकिन यह शोध का विषय है कि क्या सचमुच सरस्वती कभी प्रयाग पहुंचकर गंगा या यमुना में मिली? जब नहीं मिली तो क्यों कहा जाता है त्रिवेणी संगम।

अधिकतर इतिहासकार भारत के इतिहास की पुख्ता शुरुआत सिंधु नदी की घाटी की मोहनजोदड़ो और हड़प्पाकालीन सभ्यता से मानते थे लेकिन अब जबसे सरस्वती नदी की खोज हुई है, भारत का इतिहास बदलने लगा है। अब माना जाता है कि यह सिंधु घाटी की सभ्यता से भी कई हजार वर्ष पुरानी है।

धर्म और संस्कृत ग्रंथों के अनुसार सरस्वती का अस्तित्व था। ऋग्वेद में सरस्वती नदी का उल्लेख मिलता है और इसकी महत्ता को दर्शाया गया है। संस्कृत की कई पुस्तकों में भी इसका उल्लेख है। सरस्वती को भी सिन्धु नदी के समान दर्जा प्राप्त है।

ऋग्वेद की ऋचाओं में कहा गया है कि यह एक ऐसी नदी है जिसने एक सभ्यता को जन्म दिया। इसे भाषा, ज्ञान, कलाओं और विज्ञान की देवी भी माना जाता है। ऋग्वेद की ऋचाओं को इस नदी के किनारे बैठकर ही लिखा गया था, लेकिन इस नदी के अस्तित्व को लेकर बहुत वाद–विवाद हुआ है।

महाभारत में भी सरस्वती का उल्लेख है और कहा गया है कि यह गायब हो गई नदी है। जिस स्थान पर यह नदी

गायब हुई, उस स्थान को विनाशना अथवा उपमज्जना का नाम दिया गया। इस बात का भी उल्लेख है कि बलराम ने द्वारका से मथुरा तक की यात्रा सरस्वती नदी से की थी और लड़ाई के बाद यादवों के पार्थिव अवशेषों को इसमें बहाया गया था यानी तब इस नदी से यात्राएं भी की जा सकती थी।

ऋग्वेद में भौगोलिक क्रम के अनुसार यह नदी यमुना और सतलुज के बीच रही है और यह पूर्व से पश्चिम की तरह बहती रही है। नदी का तल पूर्व हड़प्पाकालीन था और यह 4 हजार ईसा पूर्व के मध्य में सूखने लगी थी। अन्य बहुत से बड़े पैमाने पर भौगोलिक परिवर्तन हुए और 2 हजार वर्ष पहले होने वाले इन परिवर्तनों के चलते उत्तर–पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों में से एक नदी गायब हो गई और यह नदी सरस्वती थी।

वैज्ञानिक शोध: सरस्वती नदी कभी गंगा नदी से मिली या नहीं मिली, यह शोध का विषय अब भी बना हुआ है। वैदिक काल में एक और नदी दृषद्वती का वर्णन भी आता है। यह सरस्वती नदी की सहायक नदी थी। यह भी हरियाणा से होकर बहती थी। कालांतर में जब भीषण भूकंप आए और हरियाणा तथा राजस्थान की धरती के नीचे पहाड़ ऊपर उठे, तो नदियों के बहाव की दिशा बदल गई।

एक और जहां सरस्वती लुप्त हो गई, वहीं दृषद्वती के बहाव की दिशा बदल गई। इस दृषद्वती को ही आज यमुना कहा जाता है। इसका इतिहास 4,000 वर्ष पूर्व माना जाता है। भूचाल आने के कारण जब जमीन ऊपर उठी तो सरस्वती का आधा पानी यमुना में गिर गया इसलिए यमुना में यमुना के साथ सरस्वती का जल भी प्रवाहित होने लगा। सिर्फ इसलिए प्रयाग में 3 नदियों का संगम माना गया।

धार्मिक उल्लेख : महाभारत (शल्य पर्व) में सरस्वती नामक 7 नदियों का उल्लेख किया गया है। एक सरस्वती नदी यमुना के साथ बहती हुई गंगा से मिल जाती थी। ब्रजमंडल की अनुश्रुति के अनुसार एक सरस्वती नदी प्राचीन हरियाणा राज्य से ब्रज में आती थी और मथुरा के निकट अंबिका वन में बहकर गोकर्णेश्वर महादेव के समीपवर्ती उस स्थल पर यमुना नदी में मिलती थी जिसे 'सरस्वती संगम घाट' कहा जाता है। सरस्वती नदी और उसके समीप के अंबिका वन का उल्लेख पुराणों में हुआ है।

सरस्वती का उद्‌गम: वैदिक धर्मग्रंथों के अनुसार धरती पर नदियों की कहानी सरस्वती से शुरू होती है। सरिताओं में श्रेष्ठ सरस्वती सर्वप्रथम पुष्कर में ब्रह्म सरोवर से प्रकट हुई।

सरस्वती का उद्‌गम, मार्ग और लीन: महाभारत में मिले वर्णन के अनुसार सरस्वती नदी हरियाणा में यमुनानगर से थोड़ा ऊपर और शिवालिक पहाड़ियों से थोड़ा–सा नीचे आदिबद्री नामक स्थान से निकलती थी। आज भी लोग इस स्थान को तीर्थस्थल के रूप में मानते हैं और वहां जाते हैं। प्राचीनकाल में हिमालय से जन्म लेने वाली यह विशाल नदी हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और गुजरात के रास्ते आज के पाकिस्तानी सिन्ध प्रदेश तक जाकर सिन्धु सागर (अरब की खाड़ी) में गुज़रती थी।

अधिकतर इतिहासकार भारत के इतिहास की पुख्ता शुरुआत सिंधु नदी की घाटी की मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता से मानते थे लेकिन अब जबसे सरस्वती नदी की खोज हुई है भारत का इतिहास बदलने लगा है। अब माना जाता है कि यह सिंधु घाटी की सभ्यता से भी कई हजार वर्ष पुराना है। ऋग्वेद की ऋचाओं में कहा गया है कि यह एक ऐसी नदी है जिसने एक सभ्यता को जन्म दिया। इसे भाषा, ज्ञान, कलाओं और विज्ञान की देवी भी माना जाता है।

हड़प्पा, सिंधु और मोहनजोदड़ों सभ्यता का प्रथम चरण 3300 से 2800 ईसा पूर्व, दूसरा चरण 2600 से 1900 ईसा पूर्व और तीसरा चरण 1900 से 1300 ईसा पूर्व तक रहा। इतिहासकार मानते हैं कि यह सभ्यता काल 800 ईस्वी पूर्व तक चलता रहा। लेकिन अभी सरस्वती की सभ्यता को खोजा जाना बाकी है।

बंड विकास मेलाः परंपरा, विकास, संवाद, और संस्कृति का अद्भुत संगम

लेख

अविनाश कुमार
सहायक प्रबंधक, पीपलकोटी

उत्तराखंड की शांत वादियों और ऊंचे पहाड़ों के बीच स्थित दशोली तहसील के पीपलकोटी में हर साल आयोजित होने वाला बंड विकास मेला सिर्फ एक आयोजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक जीवंतता, अवसरों का स्रोत और ग्रामीण पहाड़ी समुदायों के लिए एक जीवन–रेखा है। पीढ़ियों से ऐसे मेले सिर्फ परंपरा का उत्सव नहीं रहे हैं, बल्कि क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक ताने–बाने का अभिन्न हिस्सा रहे हैं।

मेलाः सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का दर्पण

चमोली जिले के लोगों के लिए बंड विकास मेला एक साधारण आयोजन नहीं, बल्कि साल भर प्रतीक्षा का विषय होता है। यह वह जगह है जहां लोक गीतों की गूंज पारंपरिक ढोल की थाप से मिलती है और स्थानीय पोशाकों के रंगीन नजारे वातावरण को जीवंत बना देते हैं। यह मेला परिवारों, पड़ोसियों और दूर–दराज के गाँवों से आए मेहमानों के लिए एकजुट होने और अपनी साझा विरासत का जश्न मनाने का मौका है।

महिलाएं, जो अक्सर अपने घरों में विभिन्न जिम्मेदारियों में व्यस्त रहती हैं, इस मेले में अपने हुनर को प्रदर्शित करती हैं। उनकी कढ़ाई, बुनाई और हस्तनिर्मित उत्पाद उनकी रचनात्मकता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक हैं। बच्चों के लिए यह मेला सिर्फ मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि सीखने और नई चीजें अनुभव करने का एक मौका भी है। झूले, सांस्कृतिक प्रदर्शन और प्रदर्शनियों के माध्यम से वे ज्ञान और आनंद की दुनिया में खो जाते हैं। युवा जोड़े इस मेले को नए रिश्ते बनाने और सामुदायिक संबंधों को मज़बूत करने का एक अवसर मानते हैं।

लेकिन इस मेले का महत्व इसकी सांस्कृतिक झलकियों से कहीं बढ़कर है। यह पर्वतीय क्षेत्रों की विशिष्ट चुनौतियों का समाधान भी है। पहाड़ी भूगोल और बिखरी बस्तियां अक्सर समुदायों को अलग–थलग कर देती हैं। ऐसे में मेला संवाद, सहयोग और आपसी समर्थन का एक दुर्लभ अवसर बन जाता है।

बंड विकास मेला स्थानीय लोगों और जनप्रतिनिधियों के बीच संवाद का एक सशक्त माध्यम बन गया है। जनप्रतिनिधि यहां आकर स्थानीय समस्याओं को सुनते हैं और समाधान का आश्वासन देते हैं। यह मेला एक ऐसा मंच प्रदान करता है, जहां जनता अपनी समस्याओं को प्रमुखता से उठा सकती है और उनके समाधान के लिए दबाव बना सकती है।

बदलते दौर में मेले का महत्व

डिजिटल युग और शहरी जीवनशैली के इस दौर में पारंपरिक मेलों का महत्व कम होता हुआ लग सकता है। लेकिन ग्रामीण पहाड़ी इलाकों के लिए वे अब भी अपरिहार्य हैं। बंड विकास मेला यह याद दिलाता है कि जुड़ाव और साझा अनुभवों की मानवीय आवश्यकता कभी समाप्त नहीं होती। यह समुदाय की स्थायी प्रासंगिकता और पहचान का उत्सव है।

साथ ही, इस तरह के मेले ग्रामीण–शहरी विभाजन को पाटने में अहम भूमिका निभाते हैं। वे स्थानीय शिल्पकारों और व्यापारियों को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने और उनके लिए बाज़ार खोजने का अवसर प्रदान करते हैं। हस्तनिर्मित ऊनी कपड़ों से लेकर जैविक उत्पादों तक, मेला क्षेत्रीय विशेषताओं को बढ़ावा देता है और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करता है।

संभावनाओं का संगम, जनसंपर्क का मंच

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के लिए बंड विकास मेला स्थानीय समुदाय की आकांक्षाओं के साथ अपनी कॉर्पोरेट जिम्मेदारियों को जोड़ने का एक अनूठा अवसर है। मेला सद्भावना बढ़ाने, साझेदारी बनाने और समुदाय के प्रति संगठन की सच्ची प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करने का मंच बनता है।

वीपीएचईपी परियोजना जहां तकनीकी प्रगति का प्रतीक हैं, वहीं मेला यह याद दिलाता है कि असली विकास जीवन को समृद्ध और संबंधों को पोषित करने में है। यह वह जगह है जहां परियोजना की कहानी केवल बताई नहीं जाती, बल्कि लोगों को सुना जाता है और उनकी चिंताओं को दूर भी किया जाता है।

विकास और संवाद का मंच

बंड विकास मेला, अपने स्वरूप में, जनसंपर्क का एक ऐसा माध्यम है जो विशेष रूप से पहाड़ी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावशाली साबित होता है। उत्तराखंड के इन दुर्गम इलाकों में जहां लोग कम पढ़े–लिखे हैं और सीमित संसाधनों के कारण व्यापक संपर्क साधनों से वंचित हैं, मेला एक ऐसा मंच बनता है जहां संस्थान और समाज के बीच सीधा संवाद स्थापित होता है। टीएचडीसी के जनसंपर्क विभाग द्वारा हर वर्ष मेले में लगाए जाने वाले प्रदर्शनी स्टाल ने इस संवाद को और सशक्त किया।

"I Love THDC" लिखे सेल्फी स्टैंड के साथ स्थानीय युवाओं, महिलाएं और बच्चों को उत्सुकतापूर्वक फोटो लेते देखना, टीएचडीसी के प्रति उनके विश्वास और अपनत्व को दर्शाता है। स्टॉल पर वीपीएचईपी परियोजना की जानकारी, पर्यावरण संरक्षण के प्रयास, और स्थानीय विकास योजनाओं को सरल और प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया जाता है ताकि ग्रामीण लोगों को उनकी भाषा और समझ के अनुसार जानकारी प्रदान की जा सके।

बंड विकास मेला सिर्फ एक मेला नहीं, बल्कि क्षेत्र का सामाजिक एवं सांस्कृतिक दर्पण है और क्षेत्र में विकास की गंगा बहाने का एक प्रमुख साधन है। यह उत्तराखंड की ग्रामीण पहाड़ियों की विशिष्टताओं का उत्सव है और यह दिखाता है कि सब मिलकर क्या–क्या हासिल कर सकते हैं।

हममें से जो इस जीवंत आयोजन के साक्षी और भागीदार बनने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं, उनके लिए यह अनुभव प्रेरणादायक होता है। यह सिखाता है कि कैसे परंपरा और आधुनिकता सामंजस्यपूर्वक सह–अस्तित्व कर सकते हैं, और वीपीएचईपी जैसी आधुनिक एवं सामुदायिक केंद्रित पहलों को उचित तरीकों से लोगों के बीच प्रस्तुत किया जाए तो इसमें बाधक नहीं, बल्कि इसको पूरा करने में पूर्ण सहयोग भी देंगे।

वास्तव में, बंड विकास मेला वह संगम है, जहां परंपरा प्रगति के साथ नृत्य करती है, चुनौतियां समाधान से मिलती हैं, और उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्र की भावना और संस्कृति प्रमुखता से झलकती है।

उत्तराखण्ड के छोटा धाम, बद्रीनाथ व तृतीय केदार, तुंगनाथ धाम के दर्शन

(ऋषिकेश-गोपेश्वर-तुंगनाथ-बद्रीनाथ)

भावना रावत
वरिष्ठ प्रबंधक
(नियोजन विभाग), टिहरी

यात्रा-वृतांत

मेरी पर्वतीय पैदल यात्राओं (ट्रैकिंग) की शुरूआत जून 2016 में गंगोत्री–भोजवासा–गौमुख–तपोवन की यात्रा से हुई। छोटे चार धामों में से एक धाम और पवित्र भागीरथी नदी के उद्‌गम स्थल की वह यात्रा एक नया व रोमांचक अनुभव था। उस यात्रा का अनुभव मैंने अपने मित्रों से साँझा कर उनसे, आग्रह कह लीजिए या धमकी, बोला कि उनकी अगली यात्राओं की जानकारी मुझे दिये बिना कहीं ना जाये।

जून 2016 से लगभग पाँच महीने बीत चुके थे और अचानक मुझे 23 सितंबर 2016 को अपनी कॉलेज की जूनियर का एक फ़ोन आया कि ''मैम, आज दिन तक तैयार हो जाइए हम देहरादून से ऋषिकेश आ रहे हैं और हमें तुंगनाथ जाना है! ये सुनते ही मेरे मन में सैकड़ों ख्याल घुमड़–घुमड़ के आने लगे कि ऑफिस का आज का काम खत्म करना है, बॉस से छुट्‌टी लेनी है और बरसात व ठंड के हिसाब से पैकिंग करनी है। आनन–फ़ानन में सभी काम निपटा कर दिन के लगभग तीन बजे हमारे सफ़र के साथी ऋषिकेश आये और आधे घंटे के भीतर हम चल पड़े, गोपेश्वर की ओर, सफ़र में कुछ और साथियों को जोड़ने।

ऋषिकेश से देवप्रयाग – श्रीनगर – रूद्रप्रयाग–कर्णप्रयाग–नंदप्रयाग से होते हुए हम रात को लगभग 10:30 बजे पहुँच गये थे, गोपेश्वर, जहां पवित्र गोपीनाथ मंदिर स्थापित है। गोपीनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित हैं जहां एक विशाल त्रिशूल गढ़ा हुआ है। दंत कथाओं के अनुसार यह त्रिशूल भगवान शिव ने कामदेव को मारने के लिए फेंका तो वह यहाँ गढ़ गया।

अगले दिन हम अपने वाहन से गोपेश्वर से चोपता पहुँचे तथा वहाँ से लगभग 3.5 कि.मी. की पैदल यात्रा कर पहुँच गये तुंगनाथ धाम। समुद्र तल से लगभग 3600 मी. की ऊँचाई पर स्थित व लगभग 1000 साल प्राचीन तुंगनाथ धाम उत्तराखण्ड राज्य के पंचकेदार में से एक है तथा भगवान शिव का सबसे ऊँचा मंदिर है। पुराणों के अनुसार महाभारत के युद्ध के पश्चात व्यास ऋषि ने पाण्डवों को भगवान शिव की शरण में जाने की सलाह दी किन्तु भगवान शिव पाण्डवों की और परीक्षा लेने के लिए वृष का रूप धारणा कर छुप गये और हिमालय में पांच अलग–अलग स्थानों पर प्रकट हुए। ऐसा कहा जाता है कि इनमें से प्रत्येक स्थल भगवान के एक अंश को समर्पित है– केदारनाथ (भगवान शिव का कूबड़), मदमहेवर (उनकी नाभि), तुंगनाथ (उनकी भुजाएं), रूद्रनाथ (उनका चेहरा), कल्पेश्वर (उनकी जटा या बाल)।

सितंबर माह में पर्यटकों की भीड़ कम होने का हमें फ़ायदा मिला और हमने विधिवत तुंगनाथ धाम में पूजा की व पंच केदार की कथा सुनी। उसके बाद हम तुंगनाथ मंदिर से एक कि.मी. की दूरी तय कर पहुँचे चन्द्रशिला मंदिर, जो कि समुद्र तल से लगभग 4000 मी. की ऊँचाई पर स्थित है। यहां माना जाता है कि भगवान लक्ष्मण ने ध्यान लगाया था। संपूर्ण मार्ग इतना सुंदर था कि हम सभी को समय का कुछ पता ही नहीं चला। जब साथ के कुछ पर्यटकों ने कहा कि अंधेरा होने वाला है अब आपको वापस चले जाना चाहिए, तब जाकर हमने वापसी की राह पकड़ी और रात को चौपता पहुँचें। सौभाग्य से हमें रात में चौपता में रूकने का ठिकाना मिल गया और उसी रात हमने निश्चय किया कि अब आ ही गए हैं तो आस–पास की और जगहें भी घूम ली जायें।

अगले दिन की सुबह–सुबह हम निकल पड़े और सुंदर जगह, देवरिया ताल की ओर, जो कि रूद्रप्रयाग के सारी गाँव से लगभग 2 कि.मी. की पैदल यात्रा के बाद आता है। समुद्र तल

से लगभग 2400 मी. की ऊँचाई पर स्थित इस जगह के बारे में यह मान्यता है कि इस ताल में देवताओं द्वारा स्नान किया जाता था तथा महाभारत में यक्ष ने इसी ताल से पानी पीने के लिए युधिष्ठिर से प्रश्न पूछे थे। देवरिया ताल को ''इंद्र सरोवर'' भी माना जाता है जिसका उल्लेख पुराणों या प्राचीन हिंदू ग्रंथों में किया गया है।

देवरिया ताल से लौट कर हम वापस गोपेश्वर आ गये और फिर से अचानक गोपेश्वर के बाज़ार में गोल गप्पे खाते हुए अपने एक साथी को ये ख़्याल आया कि अब यहाँ आ ही गए हैं तो बद्रीनाथ जी के दर्शन करना तो बनता है और अगली ही सुबह हम निकल पड़े बद्रीनाथ धाम की ओर।

रास्ते में मैंने पहली बार अपनी विष्णुगाड़ पीपलकोटी परियोजना का बोर्ड देखा और उसको देख के न जाने क्यों, एक सुखद सी अनुभूति हुई। थोड़ा सा रास्ता बदल कर हम ओली में कुछ देर रूके और वहाँ खिले फूलों का आनंद लेने के बाद हम दिन तक बद्रीनाथ पहुँच गये थे। वहाँ आकर हमने निर्णय लिया कि धाम में ही रूक कर रात्रि दर्शन करेंगे। दिन के भोजन के पश्चात हम निकल पड़े भारत के प्रथम गाँव माना। सुप्रसिद्ध भीम पुल पार कर के हम सरस्वती मंदिर की समीप की दुकान में चाय की चुस्कियाँ ले ही रहे थे कि अचानक फिर एक साथी के मन में ख़्याल आया कि अब जब यहाँ आ ही गए हैं, और सभी जगह अचानक ही चले जा रहे हैं तो वसुधारा के दर्शन से क्यों वंचित रह जायें?

समय व मौसम को देखते हुए मैंने सबको समझाने की कोशिश की कि अभी वसुधारा जाना ठीक नहीं। वसुधारा का मार्ग माना गाँव से 5 कि.मी. का पैदल मार्ग है जिसको सहज श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। लेकिन अंत तक जनमत की जीत हुई और हम निकल पड़े माना से वसुधारा की ओर, अचानक तय हुई पैदल यात्रा पर। रास्ते में जो भी हमें मिला वह वापसी में ही मिला और सबने एक ही बात बोली कि आप बहुत देर से निकले हैं वसुधारा के लिए। फिर भी हम आगे बढ़ते गए। मुझे हिम्मत तब बढ़ी जब सिर्फ एक इंसान हमसे बोला कि कोई बात नहीं आप कर लेंगे और समय से वापस भी आ जाएँगे। सितंबर के सर्द मौसम में हमारे सभी साथी वसुधारा से तब वापसी की राह लगे, जब भगवान ने उन पर उस जल प्रपात की धार गिरा कर संकेत दिया। किसी तरह ठंड से कपकपाते हुए हम वापस माना गाँव लौटे। अंधेरा घिर चुका था और हमने तय किया भारत के प्रथम गाँव की चाय की दुकान में चाय पीने का। ठंड का असर कह लीजिए या थकान, तबसे

आज तक उस चाय का स्वाद मुझे भूला नहीं जाता है, और उस रात हमने भगवान बद्रीनाथ जी के दर्शन कर अपनी यात्रा को विराम दिया।

अगले दिन की सुबह समय आ गया था हमारी संपूर्ण यात्रा को विराम दे कर घर वापस जाने का। बद्रीनाथ से गोपेश्वर वापस जाकर हम तुरंत ही निकल पड़े अपने–अपने गंतव्य स्थान की तरफ। मैं भी ऋषिकेश की सवारी पकड़ कर निकल पड़ी गोपेश्वर से ऋषिकेश के सुंदर सफर की ओर, जिसमें मुझे रह–रह कर ये ख़्याल आता रहा कि इस पूरे सफर की शुरूआत बस चौपता, देवरिया ताल व भगवान शिव के धाम तुंगनाथ से हुई थी, किंतु ''जितने लोग उतनी बातें'' का सकारात्मक भाव हमारी इस यात्रा पर इतना अच्छा पड़ा कि मुझे इसी यात्रा में अनियोजित, किंतु सही तरीके से जीवन में पहली बार अपनी विष्णुगाड़ पीपलकोटी परियोजना, ओली, वसुधारा तथा छोटे चार धामों में से एक, बद्रीनाथ जी के दर्शन करने का मौका मिला। अंत में माना गाँव और वसुधारा की पैदल यात्रा में ये एहसास हुआ कि आपको किसी मुश्किल सफर को टालने के लिए हर कोई कहेगा, लेकिन रोकने वालों की भीड़ में बस एक ही इंसान की सकारात्मक सोच काफी है मंजिल को पाने के लिए, और अगर वो एक इंसान कोई बाहरी व्यक्ति नहीं बल्कि आप खुद हो तो फिर आपकी जिंदगी के सफर के सच में बहुत मायने हैं!

अंधे की छड़ी

कहानी

मदन सिंह चौहान
उप प्रबंधक (विद्युत विभाग), कोटेश्वर

एक लड़का अपने बूढ़े दादा के पास गया और पूछा, ''दादाजी, क्या आप मुझे कोई नैतिक शिक्षा वाली कहानी सुना सकते हैं?'' बूढ़े दादाजी ने एक पल के लिए सोचा, फिर अपना गला साफ किया और उससे कहा कि बैठ जाओ और कहानी ध्यान से सुनो।

''सारा नाम की एक अंधी लड़की थी। उसके माता–पिता उसी कार दुर्घटना में मारे गए थे, जिस दुर्घटना में वह छोटी लड़की अंधी हो गई थी। उसकी दादी उसे गाँव ले गईं और उसका पालन–पोषण किया। सारा का कोई दोस्त नहीं था। उसकी एकमात्र साथी उसकी छड़ी थी उसकी छड़ी ने उसके लिए बहुत मदद की थी। इससे उसे अपने परिवेश में घूमने और किसी पर निर्भर हुए बिना, जगह–जगह जाने में मदद मिलती थी। चाहे कुछ भी हो, इसने उसे कभी निराश नहीं किया या जानबूझकर उसकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाई। उसकी छड़ी हमेशा उसे मुस्कुराने पर मज़बूर कर देती थी। बाद में, एक अमीर, सुंदर आदमी सारा के प्यार में पड़ गया और उससे शादी करने का फैसला किया। वह उसकी दृष्टि वापस लाने के लिए उसे देश के सबसे अच्छे अस्पतालों में से एक में ले गया। सौभाग्य से सर्जरी सफल रही और सारा को फिर से दिखना शुरू हो गया.........'' कहानी खत्म हुई। जैसे ही बूढ़े दादा रुके, लड़का थोड़ा भ्रमित होकर फुसफुसाया, ''लेकिन कहानी में कोई नैतिक शिक्षा नहीं है, दादाजी। इसमें सीखने के लिए कुछ भी नहीं है।''

बूढ़े दादा ने कहा, ''बेटा मैं आपको कुछ बताऊं। जैसे ही अंधी सारा की दृष्टि वापस आई, उसने कुछ फेंक दिया। क्या आप जानते हो बेटा कि उसने क्या फेंक दिया?'' लड़के ने एक पल सोचा, फिर अपना सिर हिलाया और बुदबुदाया, ''मुझे नहीं पता... आप बताओ।'' बूढ़े दादाजी मुस्कुराये और बोले, ''उसने अपनी छड़ी फेंक दी।'' वह छड़ी जिसने जीवन भर उसकी मदद की थी। उसकी एकमात्र साथी थी। सिर्फ इसलिए कि उसकी दृष्टि वापस आ गई, वह भूल गई कि उसने उसके साथ खड़े होकर उसकी मदद की जब कोई नहीं था। वह वो सब कुछ भूल गई जो छड़ी ने उसके लिए किया था। ''उस क्षण, बूढ़े दादा ने लड़के के कंधे को थपथपाया, आह भरी और फिर जारी रखा, ''सुनो बेटा... जिंदगी ऐसी ही है। कटु सत्य यह है कि हम लोगों को तब याद करना बंद कर देते हैं जब वे हमारे काम के नहीं रह जाते। हम जो सबसे आम गलती करते हैं वह उन लोगों को भूल जाते हैं जो हमारे साथ खड़े थे और हमारी मदद करते थे। जब हम उनके साथ थे जब हमारे जीवन का खराब समय था।

उनके कार्य और बलिदान उल्लेखनीय हैं, लेकिन हम निश्चित रूप से उन्हें चुकाने का अवसर चूक जाते हैं। हम अपने माता–पिता, यहाँ तक कि हमारे भाई–बहनों, दोस्तों और उन लोगों के बलिदानों को भी भूल जाते हैं जिन्होंने अतीत में हमारी मदद की थी।

प्रतिष्ठित महासू देवता मंदिर, हनोल (देहरादून)

यात्रा-वृतांत

नीलम चमोली काला,
लेखिका– शिक्षिका एवं समाज सेविका,
पत्नी श्री राजेश चमोली, वरि. प्रबंधक (परिकल्प–सिविल), ऋषिकेश

महासू मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार

न्याय के देवता के रूप में प्रतिष्ठित महासू देवता का मंदिर देहरादून जिले के जनजातीय क्षेत्र जौनसार भाबर से संबंध रखते हैं। महासू देवता का मंदिर खूबसूरत टोंस नदी के तट पर तिउनी से कुछ दूरी पर हनोल गांव में स्थित है जो कि तिउनी–मोरी मोटर मार्ग पर देहरादून से मसूरी होते हुए लगभग 175 कि.मी. की दूरी पर पड़ता है। हमें भी महासू देवता की कृपा से परिवार सहित मंदिर दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम परिवार सहित मसूरी, चकराता एवं तिउनी की सुंदर वादियों व पहाड़ों से होते हुए तथा अक्टूबर माह के अंतिम सप्ताह के सुहाने मौसम का आनंद लेते हुए हनोल मंदिर दर्शन हेतु पहुंचे। जहां हमने परिवार सहित प्रतिष्ठित महासू देवता के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

श्री महासू देवता मंदिर, हनोल

प्रतिष्ठित महासू देवता में महासु शब्द की उत्पत्ति हूँण भाट नामक ब्राह्मण योद्धा के नाम से जानी जाती है। दरअसल महासू अभिप्राय महाशिव यानी महासू देवता को महादेव का अवतार माना जाता है। महाशिव एक नहीं चार देवताओं का सामूहिक रूप है। चारों भाइयों के नाम है बाशीक महासू, पवाशिक महासू, बूठिया महासू और चालदा महासू जो कि शिव के अवतार माने जाते हैं। इनकी पालकी को क्षेत्रीय लोग पूजा अर्चना के लिए नियमित अंतराल पर एक जगह से दूसरी जगह प्रवास पर ले जाते हैं। देव पालकी के प्रवास पर रहने से दशकों बाद चालदा महासू के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है। चालदा महासू भ्रमण प्रिय देवता माने जाते हैं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार किरमिर राक्षस के आतंक से क्षेत्रवासियों को छुटकारा दिलाने के लिए हूँण भाट नामक ब्राह्मण ने भगवान शिवशक्ति की उपासना की थी। भगवान शिवशक्ति के प्रसन्न होने पर हनोल में चार भाई महासू की उत्पत्ति हुई और महासू देवता ने किरमिर राक्षस का वध करके क्षेत्र की जनता को इस राक्षस के आतंक से मुक्त किया। तभी से यहां के लोगों ने इसे अपना आराध्य मानकर पूजा अर्चना आरंभ कर दी तथा आज तक भी अनवरत रूप से जारी है।

जौनसार भाबर, उत्तरकाशी, हिमाचल प्रदेश के लोगों में इन देवता के प्रति गहरी आस्था है। वह इसे न्याय का देवता व मंदिर को न्यायालय मानते हैं। नवी शताब्दी में बना यह मंदिर वर्तमान में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के संरक्षण में है। यह मंदिर अन्य मंदिरों से भिन्न और विशिष्ट है। यह मन्दिर नागर शैली का बना हुआ है। मंदिर में मंडप का निर्माण बाद में किया गया। इस मंदिर की निर्माण शैली इसे उत्तराखंड के अन्य मंदिरों से भिन्न एवं विशिष्ट बनाती है। यह लकड़ी और धातु से निर्मित अलंकृत छतरियों से युक्त है।

हनोल के महासू मंदिर के परिसर में शीशे (लेड) के दो गोले मौजूद हैं। मान्यतानुसर, जो पांडव पुत्र भीम की ताकत का एहसास कराते हैं। मान्यता है कि महाबली भीम जी इन गोलों से कंचे खेला करते थे। इनका आकार देखने में छोटा लगता है, बावजूद इन्हें उठाने में अच्छे–अच्छे बलशालियों के पसीने

मंदिर प्रांगण में स्थित भीम जी के कंच्चे

छूट जाते हैं फिर भी श्रद्धालु व आने वाले पर्यटक इन गोलों पर खूब जोरजमाईश करते रहते हैं। इसमें एक गोले का वजन छः मण (240 किलोग्राम) तथा दूसरे गोले का वजन नौ मण (360 किलोग्राम) है।

हनोल एक बहुत ही खूबसूरत स्थान है। इस जगह का नाम हनोल पड़ने से पहले यह जगह चकरपुर के रूप में जानी जाती थी। द्वापर युग में पांडवों ने लाक्षागृह से सुरक्षित निकल कर इसी स्थान पर शरण ली थी। 1250 मीटर की ऊंचाई पर बना मिश्रित स्थापित शैली का यह मंदिर नवीं सदी का माना जाता है। जबकि पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के रिकॉर्ड में मंदिर का निर्माण 9वीं एवं 10वीं सदी में माना गया है। वर्तमान में इसका संरक्षण भी पुरातन सर्वेक्षण विभाग ही कर रहा है। जौनसार भाबर के हनौल गांव में स्थित यह मंदिर कला व संस्कृति का अनूठा उदाहरण है। कहा जाता है कि यह मंदिर हूँण भाट नामक वीर ने बनाया था।

खुदाई के दौरान यहां भगवान शिव जी, शक्ति दुर्गा माता, शिवलिंग, भगवान विष्णुजी, लक्ष्मीजी, सूर्य एवं कुबेर जी की सहित कई देवी देवताओं की मूर्तियां मिली हैं। इन्हें यहाँ संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है। प्रकृति की गोद में बसे प्रसिद्ध मंदिर में जो भी सच्चे मन से कुछ मांगता है उसकी मनोकामनाएं जरूर पूर्ण होती हैं। दिलचस्प बात यह है कि दिल्ली के राष्ट्रपति भवन से इस मंदिर का सीधा संबंध है। राष्ट्रपति भवन से इस मंदिर के लिए नमक भेजा जाता है और यहां के भोजन व प्रसाद में इसी नमक का प्रयोग होता रहा है। महासू देवता के मंदिर के गर्भगृह में भक्तों का जाना निषेध है केवल पुजारी ही गर्भगृह में प्रवेश कर सकते है। गर्भगृह में एक पानी की धारा भी निकलती है जो कहां से निकलती है और कहां जाती है, यह भी एक रहस्य है। श्रद्धालुओं को यही जल प्रसाद स्वरूप दिया जाता है। यह मंदिर घाटा पत्थर से बना है। बिना गारे की चिनाई वाले इस मंदिर के 32 कोने, बुनियाद से लेकर गुंबद तक एक के ऊपर एक रखे कटे पत्थर पर टिके हैं। बेजोड़ नक्काशी यह मंदिर के सौंदर्य में चार चाँद लगाती है। महासू देवता का मंदिर वास्तुकला की नागर शैली में बना एक बहुत ही आकर्षक व सुंदर है। जौनसार भावर अपनी धार्मिकता लोकसंस्कृति, लोकगीत, संगीत एवं लोकनृत्य के लिए विख्यात व प्रसिद्ध है। यहां का संगीत व नृत्य हर आयोजन में चार चाँद लगाते है तथा सभी सामूहिक रूप से गीत–संगीत व नृत्य में सामूहिक रूप से सम्मिलित होकर ही सभी धार्मिक अनुष्ठान व शादी–ब्याह सम्पन्न करते हैं। जो कि किसी भी आयोजन का अनिवार्य हिस्सा है। महासू मंदिर में सितंबर माह में जागड़ा मेले का आयोजन होता है। जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालु जागड़ा मेले में पहुंचते हैं। इस मेले में श्रद्धालू रात भर देवताओं की स्तुति करते हुए रात भर नृत्य करते हैं और गीत गाते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य एवं अध्यात्म से परिपूर्ण यह स्थान आपको अवश्य ही मंत्रमुग्ध कर देगा। मंदिर तक पहुंचने के लिए आप हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून से बस, ट्रेकर, कार या बाइक द्वारा आसानी से पहुंच सकते हैं।

नीम/एजाडिरेक्टा इंडिका के उपयोग

(डाबर डॉट काम से साभार संकलित)

स्वास्थ्य परिचर्चा

नीम को प्रकृति द्वारा मानव जाति के लिए वरदान माना जाता है। आयुर्वेद द्वारा नीम के उपयोग की सलाह कई तरह की बीमारियों के लिए दी गई है। इस तरह के उपयोग का श्रेय रक्त पर इसके शुद्धिकरण प्रभाव को दिया जाता है। नीम पर वैज्ञानिक शोध से पता चलता है कि यह रामबाण है। इसे जीवाणुरोधी, कृमिनाशक, एंटीवायरल, एंटीकैंसर और सबसे महत्वपूर्ण रूप से इम्यूनोमॉडुलेटरी एजेंट माना जाता है। नीम के पत्तों के अनेक लाभ और उपयोग इस प्रकार हैं:

मुँहासे का इलाज करता है- नीम में सूजनरोधी गुण होते हैं जो मुंहासों को कम करने में मदद करते हैं। एजाडिरेक्टा इंडिका त्वचा के दाग–धब्बों को कम करने में भी मदद करता है।

त्वचा को पोषण देता है- नीम विटामिन–ई का एक समृद्ध स्रोत है जो क्षतिग्रस्त त्वचा कोशिकाओं की मरम्मत में मदद करता है।

फंगल संक्रमण का इलाज करता है- नीम में वैज्ञानिक रूप से सिद्ध एंटीफंगल गुण होते हैं जो फंगल संक्रमण के इलाज में मदद करते हैं।

विषहरण में उपयोगी- नीम आंतरिक और बाह्य दोनों तरह से विषहरण में उपयोगी साबित हो सकता है। नीम के पत्तों या पाउडर का सेवन गुर्दे और यकृत को उत्तेजित करता है, जिससे चयापचय बढ़ता है और शरीर से विषाक्त पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। बाहरी रूप से, नीम के स्क्रब या पेस्ट का उपयोग आपकी त्वचा से कीटाणुओं, बैक्टीरिया, गंदगी आदि को हटाने के लिए किया जा सकता है, जिससे चकत्ते और त्वचा संबंधी बीमारियों से बचाव होता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है- नीम अपने रोगाणुरोधी और जीवाणुरोधी प्रभावों के लिए जाना जाता है। ये गुण प्रतिरक्षा को बढ़ाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं।

कीट एवं मच्छर निरोधक- आप कीड़ों को भगाने के लिए नीम की कुछ पत्तियाँ जला सकते हैं। यह विभिन्न प्रकार के मच्छरों के खिलाफ भी प्रभावी है। मलेरिया के सभी घरेलू

उपचारों में से, नीम मलेरिया के शुरुआती लक्षणों के इलाज के लिए सबसे अच्छा है।

जठरांत्रिय रोगों से बचाता है- नीम के सूजनरोधी गुण जठरांत्र संबंधी मार्ग की सूजन को कम करने में मदद करते हैं, जिससे कब्ज, पेट के अल्सर, पेट फूलना आदि जैसी कई बीमारियों को कम करने में मदद मिलती है।

घावों का इलाज करता है- नीम के पत्तों में एंटीसेप्टिक गुण होते हैं, इसलिए इसका उपयोग घावों को भरने के लिए किया जाता है।

रूसी कम करता है- नीम का इस्तेमाल शैंपू और कंडीशनर में बड़े पैमाने पर किया जाता है। एजाडिरेक्टा इंडिका में एंटीफंगल और जीवाणुरोधी गुण होते हैं जो रूसी को खत्म करने और आपके बालों को मज़बूत बनाने में मदद करते हैं।

जोड़ों के दर्द को कम करता है- प्रभावित क्षेत्र पर नीम का तेल या अर्क लगाने से दर्द और परेशानी कम हो सकती है। इसलिए गठिया के इलाज के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

त्वचा को एक्सफोलिएट करता है- नीम एक बेहतरीन एक्सफोलिएंट है। यह त्वचा की सतह से मृत कोशिकाओं को हटाने में मदद करता है, जिससे दाग–धब्बों को बढ़ने से रोकने में मदद मिलती है।

कार्यालय में अधिकांशत: प्रयोग होने वाले अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय

Sl.No.	English	हिंदी
1.	Act	कार्य / कृत्य / अधिनियम
2.	Applicant	प्रार्थी / आवेदक
3.	Acknowledge	प्राप्ति की सूचना देना / पावती देना / आभार व्यक्त करना
4.	Approximate	अनुमानित / लगभग
5.	Abuse	दुर्व्यहार / दुरूपयोग
6.	Absence	अनुपस्थिति / गैर हाजिरी / अभाव
7.	Absorption	शामिल / समावेशन / आमेलन / अवशोषण
8.	Accident	दुर्घटना / हादसा / संयोग
9.	Address	पता / अभिभाषण / संबोधन / समाधान
10.	Advantage	लाभ / सुविधा / अनुकूल स्थिति
11.	Alignment	गठबंधन, संरेखन
12.	Annexure	अनुलग्नक / संलग्नक
13.	Anticipatory	प्रत्याशित / पूर्वानुमानित / अग्रिम
14.	Apply	आवेदन करना, प्रयोग करना, लागू करना
15.	Appointment	नियुक्ति / मुलाकात का समय
16.	Award	पुरस्कार / प्रदान करना
17.	Boarding	आवास / बोर्डिंग
18.	Binding	जिल्दसाजी / बाध्यकारी
19.	Budget estimate	बजट प्राक्कलन / बजट अनुमान
20.	Broker	दलाल / मध्यस्थता करना
21.	Book value	बही मूल्य, अंकित मूल्य
22.	Body	शरीर, संस्था, निकाय
23.	Communicate	संदेश पहुंचाना, बातचीत
24.	Cabinet	मंत्रिमंडल, पेटिका
25.	Campaign	प्रचार / अभियान
26.	Case	मामला / मुकदमा / स्थिति / विषय
27.	Casual	आकस्मिक, अनियत, लापरवाह, असावधान, अनौपचारिक
28.	Cater	आवश्यकता पूर्ति / भोजन का प्रबंध
29.	Charge	शुल्क, प्रभार, खर्च, आरोप, आवेश
30.	Chest	सीना, तिजोरी
31.	Cebate	बहस, वाद विवाद

कार्यालय में अधिकांशतः प्रयोग होने वाले अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय

Sl.No.	English	हिंदी
32	Deed	विलेख
33	Degrade	ग्रेड घटाना, मर्यादा कम करना
34	Delegate	प्रतिनिधि, सौंपना, प्रत्यायोजित करना
35	Deliver	वितरित करना, जन्म देना, देना
36	Deputation	प्रतिनियुक्ति, प्रधिनिधिमंडल, शिष्टमंडल
37	Discharge	छुट्टी, चुकाना, कार्यमुक्ति, बहाना
38	Entertain	सत्कार, मनोरंजन, ग्रहण करना
39	Execute	पूरा करना, निष्पादन करना
40	Favourable	लाभदायक, अनुकूल
41	Feasibility report	व्यवहार्यता रिपोर्ट, साध्यता रिपोर्ट
42	Figure	आकृति, आंकड़ा, व्यक्तित्व, गणना करना
43	Fire	आग, गोली चलाना, दागना, नौकरी से बर्खास्त
44	Flood	बाढ़, भारी संख्या, अंबार लगना,
45	Follow	अनुसरण, पालन, पीछा करना, परिणाम होना, जारी रखना
46	Formal	औपचारिक
47	Foundation	नींव, आधार, प्रतिष्ठान, स्थापना
48	Get together	मिलन समारोह, एकत्रित होना
49	Govern	शासन करना, नियंत्रित करना
50	Ground	आधार, मूल कारण, थल, जमीनी
51	Hail	ओला, सराहना, अभिवादन
52	Handle	हत्था, संभालना, निपटना, समाधान निकालना
53	Implementation	लागू करना, कार्यान्वयन करना
54	Inclination	झुकाव, रुझान, प्रवृत्ति
55	Indisputable	कोई विवाद नहीं, निर्विवाद
56	Induction	शामिल होना, प्रवेश, समावेश
57	Infrastructure	अवसंरचना, आधारभूत संरचना,
58	Invitation	निमंत्रण, आमंत्रण
59	Job	रोजगार, व्यवसाय, नौकरी
60	Join	कार्यभार ग्रहण करना, जोडना, संयोजित करना
61	Key	चाबी, मूल, मुख्य, आधारभूत
62	Land mark	ऐतिहासिक, महत्वपूर्ण, मील का पत्थर

"अन्याय में सहयोग करना अन्याय करने के ही समान है।" – प्रेमचन्द

कार्यालय में अधिकाशत: प्रयोग होने वाले वाक्यांश के हिंदी प्रयोग

Sl.No.	English	हिंदी
1.	A revised draft memorandum is put as desired by.	की इच्छानुसार ज्ञापन का परिशोधित प्रारूप प्रस्तुत है।
2.	Accepted for payment.	भुगतान के लिए स्वीकृत।
3.	Action has already been taken in the matter.	इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है।
4.	Action has not yet been initiated.	कार्रवाई अभी शुरू नहीं की गई है।
5.	Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
6.	Administrative approval may be obtained.	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
7.	Application may be rejected.	आवेदन अस्वीकार कर दिया जाए।
8.	As in force for the time being.	जैसा कि फिलहाल लागू है।
9.	Call for an explanation.	जवाब तलब किया जाए।
10.	Carried forward.	अग्रेनीत
11.	Competent authority's sanction is necessary.	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है।
12.	Consolidated report may be furnished.	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।
13.	Day to Day administrative work.	दैनंदिन प्रशासनिक कार्य।
14.	Deduction at source.	स्त्रोत पर कटौती।
15.	Delay in returning the file is regretted.	फाइल को लौटाने में हुई देरी के लिए खेद है।
16.	Discrepancy may be reconciled.	विसंगति का समाधान कर लिया जाए।
17.	Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें।
18.	Draft has been amended accordingly.	प्रारूप तदनुसार संशोधित कर दिया गया है।
19.	Draft reply is put up for approval.	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
20.	Follow up action.	अनुवर्ती कार्रवाई।
21.	I have been directed to inform you/ request you/ask you	मुझे निदेश हुआ है कि मैं आपको सूचित करूं/ आपसे निवेदन करूं/आपसे पूछूं।
22.	I have the honour to say.	सादर निवेदन है।
23.	Issue reminder urgently.	तुरंत अनुस्मारक भेजिए।
24.	Kindly acknowledge.	कृपया पावती भेजिए।
25.	May be informed accordingly.	तदनुसार सूचित कर दिया जाए।

Sl.No.	English	हिंदी
26.	Needful has been done.	जरूरी कार्रवाई कर दी गई है।
27.	No decision has so far been taken in the matter.	इस मामले पर अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है।
28.	No further action is called for	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
29.	Please circulate and file.	कृपया सभी को दिखाकर फाइल कर दीजिए।
30.	Please put up a self-contained note (summary)	स्वतः पूर्ण टिप्पणी (सारांश) प्रस्तुत कीजिए।
31.	Please see the preceding notes.	कृपया पिछली टिप्पणियाँ देख लें।
32.	Please speak.	कृपया बात करें।
33.	Retrospective effect cannot be given on this order.	इस आदेश को पीछे की तारीख से लागू नहीं किया जा सकता।
34.	Seen and returned with thanks.	देखकर सधन्यवाद वापस किया जाता है।
35.	The bill is returned herewith with the following objection.	बिल निम्नलिखित आपत्तियों के साथ वापस किया जाता है।
36.	There is no cause to modify the orders already passed..	पहले दिए गए आदेशों में परिवर्तन करने का कोई कारण नहीं है।
37.	The proposal is self explanatory. It may be accepted.	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है। इसे मान लिया जाए।
38.	The proposal is quite in order.	यह प्रस्ताव बिल्कुल नियमानुकूल है।
39.	The receipt of the letter has been acknowledged.	पत्र की पावती भेज दी गई है।
40.	The required papers are placed below.	अपेक्षित कागज–पत्र नीचे रखे हैं।
41.	This may be kept pending till a decision is taken on the main file.	मुख्य मिसिल पर निर्णय होने तक इसे रोके रखिए।
42.	This may please be treated as urgent.	कृपया इसे अविलंबनीय समझे।
43.	We agree as a very special case. This should not, however, be quoted as a precedent.	इसे बहुत विशेष मामला मानकर हम सहमति देते हैं। परंतु इसका आगे उदाहरण के रूप में उल्लेख न किया जाए।
44.	We have no remarks to offer.	हमें कोई टिप्पणी नहीं करनी है।
45.	He should report to the branch as soon as he receives this memorandum.	वे इस ज्ञापन के प्राप्त होते ही तुरंत शाखा में ड्यूटी पर आ जाएं।
46.	We hope that you will not force us to take untoward steps against you.	आशा है, आप हमें कोई अप्रिय कदम उठाने के लिए बाध्य नहीं करेंगे।
47.	On receipt of the above documents, we will proceed further.	उक्त दस्तावेज प्राप्त होने पर हम आगे कार्रवाई करेंगे।
48.	To adjourn sine die.	अनिश्चित काल के लिए स्थगित करना।
49.	It is a matter of regret that statements of above nature which are already overdue have not been submitted by your branch till date.	खेद की बात है कि उपर्युक्त प्रकार के विवरण, जो हमें बहुत पहले मिल जाने चाहिए थे, आपकी शाखा ने हमें अभी तक प्रस्तुत नहीं किए हैं।
50.	While sending to us the relative policy the premium amount to be remitted by us may kindly be advised.	संबंधित पॉलिसी भेजते समय कृपया हमें यह भी बताएं कि हमें प्रीमियम की कितनी राशि भेजनी है?

कविता

टिहरी पीएसपी

सी.एस.राणा,
अपर महाप्रबंधक, पीएसपी, टिहरी

[दुनिया के सभी महान कार्यों के पीछे 3M (Man-Machine-Money) के महत्व के अलावा, कुशल नेतृत्व, संगठन, सम्मिलित प्रयास, प्रकृति से जूझने की क्षमता, और अनवरत प्रयासों का भी महत्व होता है और तब जाकर एक महाप्रयास फलीभूत होता है। यद्यपि टिहरी बांध के द्वितीय चरण की पीएसपी परियोजना के सफल क्रियान्वयन के पीछे की कहानी को समटने के लिए सैकड़ो पन्ने भी कम पड़ेंगे, फिर भी प्रस्तुत कविता इस महाप्रयास की एक झलक जरुर देती है]

ठेकेदार इंजीनियर हिल उठे,
मैनेजमेंट ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़ी पीएसपी में आई फिर से नई जवानी थी।
लक्ष्य हासिल करना है, सभी ने मन में ठानी थी,
नौकरी की कीमत क्या होती है,
सबने ही पहचानी थी।
वर्चस्व की लड़ाई थी ये,
हार ना हमने मानी थी,
पार की सब बाधायें हमने,
सम्मिलित शक्तिपुंज की ताकत
प्रकृति ने भी पहचानी थी।
कर्मवीरों के आगे,
हार जाती, हर बाधाएँ हैं
पर्वत शीश झुका देता है,
बदल देती रुख हवायें हैं।

गंगा मैया की कृपा से,
हमने ना हिम्मत हारी है,
चलते रहेंगे स्वच्छ मन से,
अभी तो सफर जारी है....
सम्मिलित प्रयास और कुशल नेतृत्व से,
महाप्रयास ये साकार हुआ,
बहुप्रतीक्षित शक्ति पुंज से,
दूर सब अंधकार हुआ।
प्रणाम उन सभी आत्माओं को,
निर्माण के दौरान जिन्होंने प्राणदान दिया,
अमूल्य प्राणों को न्यौछावर करके,
हम सब पर अहसान किया।

कविता

नारी सशक्तिकरण

ज्योति
डी.ई.ओ (मा.सं एवं प्रशा.) पीपलकोटी

सुनो द्रोपदी वस्त्र उठा लो,
अब गोविंद ना आएंगे।
छोड़ो मेंहदी खड़ग संभालो,
खुद ही अपना चीर बचा लो,
ध्यूत बिछाए बैठे शकुनि,

मस्तक सब बिक जाएंगे,
सुनो द्रोपदी वस्त्र उठा लो,
अब गोविंद ना आएंगे।
कब तक आस लगाओगी तुम,
बिके हुए अखबारों से,
कैसी रक्षा मांग रही हो,
दुशासन दरबारों से।

स्वयं जो लज्जा हीन पड़े हैं,
वे क्या लाज बचाएंगे,
सुनो द्रोपदी वस्त्र उठा लो,
अब गोविंद ना आएंगे।

कल तक केवल अंधा राजा,
अब गूंगा–बहरा भी है,
होंठ सिल दिए हैं जनता के,
कानों पर पहरा भी है।
तुम ही कहो ये अश्रु तुम्हारे,
किसको क्या समझाएंगे,
सुनो द्रोपदी शस्त्र उठा लो,
अब गोविंद ना आएंगे...।

कविता

मन की भाषा हिंदी

संदीप कुमार यादव
अवर अभियंता,हाइड्रो मकैनिकल, टिहरी

अंग्रेजी जो केवल धन की भाषा बोल सकती थी,
रखी बाज़ार में वस्तु का केवल मोल करती थी।
जुड़ी वो काम से इसलिए बनी वो मान की भाषा,
बनी वो आज पूरे विश्व के अभिमान की भाषा।

हिंदी थी, जो मन के बंद ताले खोल सकती थी,
हमारी आत्मा और ज्ञान का पथ बोल सकती थी।
बनाकर राज की भाषा बहुत अच्छा किया तुमने,
हटाकर काज से इसको बहुत गच्चा दिया तुमने।

बना ले फिर से हम इसको व्यापार की भाषा,
बना ले फिर से हम इसको घर परिवार की भाषा,
बना ले फिर से हम इसको अपने प्यार की भाषा।

क्यूं कि अगर हम चाहते हैं कि
हो कदर हिंदी की पग–पग पर,
तो उठो, जागो करो हुकांर और पहुंचा दो इसे नभ पर।

अगर भाषा मरी तो तुम भी प्यारे बच नहीं सकते,
भले ही हो करोड़ों गुण पर तुम कुछ रच नहीं सकते।

महज भाषा नहीं ये माँ हमारी हमको रचती है,
बचेगी लाज जब इसकी, हमारी लाज बचती है।
और छोड़ा गर इसे तुमने तो तुम भी छूट जाओगे,
और दुनिया नहीं तुम खुद ही खुद से रूठ जाओगे।

तो उठो, जागो करो स्वीकार इसको, प्यार दो इसको,
तुम्हारे मान का, सम्मान का संसार दो इसको।
फिर हम नहीं ये सारी धरती डोल जाएगी,
और तुम्हारे कर्म की गाथा, ये सदियों तक सुनाएगी।

कहेगी ये हमारे अन्नदाता, ज्ञानदाता है,
कहेगी ये हमारे मान और अभिमान दाता है।
कहेगी ये हमारे क्लेश, दुख और कष्ट भक्षक है,
कहेगी ये हमारे धर्मगुरू और धर्म रक्षक है।

कविता

हिंदी से हैं हिंदुस्तान

सुरेश कुमार
उप अभियंता (तकनीकी) ऋषिकेश

हिंदी हिंद की आन है,
गर्व हमें है हिंदी पर।
है भाषा ये सरल बड़ी,
इसकी अलग पहचान है।।

हिंदी हिन्द का गहना है,
इसे सजायें और सवारें।
दुनियाँ के कोने–कोने में,
आओ इसको और निखारें।।

ज्ञान हो हर भाषा का
ये उत्तम बात है।
पर मात्र भाषा को पीछे रखना,
ये विश्वासघात है।।

हिंदी भाषी हिंदी अपनायें,
हिंदी को हर घर–घर में।
उन्नत होगा भारत दीप,
जीवन के हर सफर में।।

कविता

भेष तुम बदल दो

रश्मि बडोनी
प्रबंधक (आईटी) ऋषिकेश

तोड़ दो मरोड़ दो बंधनों को खोल दो,
वज्र के प्रहार से दुष्ट को खदेड़ दो,
अब समय की मांग है भेष तुम बदल दो।
हाथ में हथियार हो चाल भी तीव्र हो,
बाज सी नज़र हो बुरे की समझ हो,
नृत्य को छोड़ दो हथियार चलाना सीख लो।
हाथ में पंञ्च हो क्लिपें भी नुकीली हों
दांत भी वज्र हो आँखों का डर हो,
हार में छुपा हथियार हो,
अब समय की मांग है भेष तुम बदल दो।
आँचल को छूने की न किसी की सोच हो,
नाखूनों को सीधे आँखों में घोंप दो,
अंजाम हर आवाम के जहन में घोल दो।
रूह भी काँप जाये ऐसा हस्र कर दो,
नरभक्षी बनके समय को बदल दो,
अब न गोविन्द आयेंगे ये सभी को बोल दो,
ये समय की मांग है, भेष तुम बदल दो।

“क्रोध में विचार पट्ट बंद हो जाते हैं।” – प्रेमचन्द

कविता

पर्यावरण

सीमा देवी
परिचारक (मा.सं. एवं प्रशा.), पीपलकोटी

खतरे में है वन्य जीव सब।
मिलकर इन्हें बचाना है।
आओ हमें पर्यावरण बचाना है।
पेड़ न काटे बल्कि पेड़ लगाना है।
वन हैं बहुत कीमती इन्हें बचाना है।
वन देते है हमें ऑक्सीजन,
इनमें न आग लगाओ,
आओ पर्यावरण बचाओ।

जंगल अपने आप उगेगें पेड़ फल–फूल बढ़ेंगे।
कोयल कूके मैना गाये हरियाली फैलाओ।
आओ पर्यावरण बचाओ।
पेड़ों पर पशु पक्षी रहते।
पत्ते घास हैं खाते चरते।
घर न इनके कभी उजाड़ों,
कभी न इन्हे सताओ,
आओ पर्यावरण बचाओ।

कविता

बीता कल

आरती राज
प्रशिक्षु (पर्यावरण), पीपलकोटी

छोटा सा गाँव था मेरा,
छोटा सा एक घर,
खो गये थे सपनों में,
न थी कल की फिकर।

छिन गया वो बचपन मेरा,
टूट गये वो सपने,
खो गयी वो यादें मेरी,
खो गये वो अपने।

हर पल कल की सोच रहे हैं,
खो रहे हैं खुद का आज,

बीता कल तो भूल गये हैं,
पल जो था सबसे खास।
सोचा यही है जीवन रूके नहीं,
मेरे पैरों की छाप,
देख लिया पूरा संसार,
समझा नहीं किसी ने भी एक बार।

लोगों की बातों से,
भीग गये मेरे नैना,
पर मां बाप का प्यार देखकर,
झूम उठी मैं फिर एक बार।

कविता

बेटी की विदाई

श्रीमती पुष्पा टम्टा
परिचारक (मा.सं. एवं प्रशा.), पीपलकोटी

कन्यादान हुआ जब पूरा, आया समय विदाई का।
हँसी खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।।

बेटी के उस कातर स्वर ने, बाबुल को झकझोर दिया।
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया।।

अपने आँगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।
मेरे रोने को पलभर भी, बिल्कुल नही सहा तुमने।।

क्या इस आँगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं।
अब मेरे रोने का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं।।

नहीं रोकते चाचा, ताऊ, भैया से भी आस नहीं।
ऐसी भी क्या उदासी हैं, कोई आता पास नहीं।।

बेटी की बातों को सुन के, पिता नहीं रह सका खड़ा।
उमड़ पडे आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।

माँ को लगा गोद से कोई, मानों सब कुछ छीन चला।
फूल सभी घर की फुलवारी से, कोई ज्यों बीन चला।।

बेटी के जाने पर घर ने, जाने क्या–क्या खोया है।
कभी न रोने वाला पिता भी, फूट–फूटकर रोया है।।

कविता

श्वेत वर्ण

अश्वनी आनंद
उप प्रबंधक (एम.पी.एस), ऋषिकेश

मैं श्वेत वर्ण में लिपटा हुआ।
नभ में हवा सा तैरता हुआ।
जल का बोझ उठा रहा हूं।
पृथ्वी के ऊपर मंडरा रहा हूं।

देख रही मुझे मुरझाई बगिया।
किसान की आँस भरी अंखियां।
सूखी नदियां मुझे बतला रही है।
यह धरा तुझे पुकार रही है।

कुंठित मुझको कर रहा है।
ये श्वेत आवरण मुझे खल रहा है।

किस काम का ये जीवन है मेरा।
जो ला न सका खुशियों का मेला।
मेरे जीवन का बोझ बढ़ रहा है।
स्याह रंग मुझमें भर रहा है।
जीवन भर जिसका मलाल रहा।
वो करने को अब उत्साह भरा।

किसान की आँखें अब चमक रही हैं।
सूखी नदियां अब चहक रही हैं।
धरती अपनी प्यास बुझा रही है।
मेरे जीवन को सफल बना रही है।

कविता

खुद की सुनो

दवनीत कौर
सहायक प्रबंधक
(मा.सं. एवं प्रशा.), ऋषिकेश

क्या सही....
क्या गलत.....
इसे तय कौन करता है?

लफ्जों का खेल है,
अनकहे जो है,
भला कोई....
तुम्हारे सिवा समझता है?

खुद को सुनना अगर बेहतर लगे,
फिर भी....
क्या दूसरों के कहे बेहतरीन के पीछे,
भागने का मन करता है?

सबकी उम्मीदों को,
मुट्ठी में बंद करके,
मंजूरी के लिए...
बस, एक बार...
क्या खुद को पुकार लगाने का,
दिल करता है?

या....
दूसरों की खिदमत करके,
आइने में अपनी नज़रों को
छुपाने का मन करता है?

इस दौड़ते जहां में,
लोगों की फरमाइशें छोड़.....
खुद की ख्वाहिशों के पन्नों को
क्यूँ ना आगे बढ़ाया जाए?

हर दिन खुद को बेहतर बनाने की आड़ में,
अपनी खामियों को क्यूँ ना सुधारा जाए?

पलटकर देखने का मन करे,
तो यहाँ तक आने का ख्याल आए....

तुमने खुद को सही परखा है....
आज से हमेशा, बस खुद को चुनो....
और खुद की सुनो।।

निगम में आयोजित हुई राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम

हिंदी माह/पखवाड़ा/सप्ताह/दिवस का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय

हिंदी दिवस समारोह

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय ऋषिकेश में सितंबर, 2024 का संपूर्ण माह 'हिंदी माह' के रूप में उत्साह के साथ मनाया गया। इस दौरान भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित किए गए हिंदी दिवस के भव्य समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह के कर–कमलों से टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (वित्त), श्री सिपन कुमार गर्ग ने प्राप्त किया। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की ओर से श्री सिपन कुमार गर्ग, निदेशक (वित्त) के साथ श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री रोबिन सिंघल, वरि. प्रबंधक (वित्त), श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) सहित हिंदी अनुभाग के अनेक वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

हिंदी दिवस के अवसर पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री आर. के. विश्नोई ने निगम में अधिकारियों व कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अपील जारी की, जिसे माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह, माननीय केंद्रीय विद्युत मंत्री, श्री मनोहर लाल एवं केंद्रीय विद्युत राज्य मंत्री, श्री श्रीपाद येसो नाइक की हिंदी दिवस पर जारी की गई अपील के साथ निगम की सभी यूनिटों/कार्यालयों के कर्मचारियों के मध्य परिचालित किया गया।

हिंदी माह का आयोजन

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में सितंबर, 2024 में 'हिंदी माह' मनाया गया, जिसका उद्घाटन 05 सितंबर को कार्यपालक निदेशक (बिजनेस डेवलपमेंट), श्री वीर सिंह की अध्यक्षता में एवं उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री एस.बी. प्रसाद की उपस्थिति में **हिंदी नोडल अधिकारियों की बैठक** में किया गया। 09 सितंबर को कार्यालय के कनिष्ठ अभियंताओं के लिए **हिंदी कार्यशाला** और 10 सितंबर को **हिंदी निबंध प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया, जिसका विषय **''मौलिक सोच की भाषा है-हिंदी''** रखा गया था। इसी क्रम में 11 सितंबर को **नोटिंग-ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता,** 12 सितंबर को **अनुवाद प्रतियोगिता,** 16 सितंबर को **हिंदी सुलेख प्रतियोगिता,** 17 सितंबर को **हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता,** 18 सितंबर को कार्यपालकों एवं गैर कार्यपालकों के लिए अलग–अलग **हिंदी ई-मेल प्रतियोगिता,** 19 सितंबर को नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए **राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** एवं 20 सितंबर को **''आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस के विकास से मानवता को मदद मिलेगी''** के पक्ष एवं विपक्ष में **वाद-विवाद प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते श्री वीर सिंह, कार्यपालक निदेशक (बिजनेस डेवलपमेंट), साथ में हिंदी अनुभाग के अधिकारी व कर्मचारी

हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य, श्री विकास दवे का शॉल ओढ़ाकर स्वागत करते श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा)

वाद विवाद प्रतियोगिता के अवसर पर विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के माननीय सदस्य श्री विकास दवे, निदेशक, साहित्य अकादमी ने भी इस कार्यक्रम में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से शोभा बढ़ाई। उन्होंने आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस के नवीन पहलूओं के बारे में जानकारी देते हुए प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

हिंदी माह के दौरान 20 सितंबर, 2024 को कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में महिला वेलफेयर एसोशिएसन की सदस्य महिलाओं के लिए भी हिंदी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में एसोशिएसन की प्रमुख संरक्षिका, श्रीमती चंचल विश्नोई, श्रीमती कामिनी सिंह एवं श्रीमती मनु शिखा गुप्ता, संरक्षिका, श्रीमती मंजू वर्मा, अध्यक्षा सहित सभी सदस्याएं उपस्थित थीं। कार्यक्रम में एसोशिएसन की सभी सदस्याओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और हिंदी के ज्ञान को साझा किया। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

महिला वेलफेयर एसोशिएसन की संरक्षक, अध्यक्ष एवं महिला सदस्यों का ग्रुप फोटोग्राफ

हिंदी माह का समापन तथा पुरस्कार वितरण

हिंदी माह का समापन एवं पुरस्कार वितरण 30 सितंबर, 2024 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक) ने की। इस अवसर पर निदेशक (कार्मिक) के साथ मुख्य महाप्रबंधक (कारपोरेट नियोजन/एमपीएस), श्री ए. के. घिल्डियाल एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिकल्प–विद्युत), श्री आर. आर. सेमवाल ने मंच की शोभा बढ़ाई। मंचासीन अतिथिगणों का स्वागत प्लांटर भेंट कर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर श्री ए. के. घिल्डियाल, मुख्य महाप्रबंधक (कारपोरेट नियोजन/एमपीएस) ने सभी उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई, जिसमें निगम

के अधिकारियों व कर्मचारियों से अनुरोध किया गया था कि वे राजभाषा विभाग के द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का भरसक प्रयास करें। श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने हिंदी माह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए एक **लघु प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया, जिसमें विभागाध्यक्षों/अनुभाग प्रमुखों के साथ सभी उपस्थित कर्मचारियों ने उत्साह से प्रतिभागिता की। प्रत्येक प्रश्न का सही उत्तर देने वाले प्रतिभागियों को उसी समय नगद पुरस्कार प्रदान किए गए।

समापन समारोह में शामिल अधिकारी एवं कर्मचारी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में हाथ उठाकर भाग लेते हुए

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक) ने अपने कर–कमलों से हिंदी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं निगम में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत अधिकारियों व कर्मचारियों को पुरस्कृत किया।

विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह, साथ में मुख्य महाप्रबंधक (कारपोरेट नियोजन/एमपीएस), श्री ए.के. घिल्डियाल एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिकल्प–विद्युत), श्री आर. आर. सेमवाल

10 सितंबर, 2024 को आयोजित हुई हिंदी निबंध प्रतियोगिता में सुश्री किरन सिंह, भूवैज्ञानिक (भूगर्भ एवं भू–तकनीकी)–प्रथम, श्री रमेश सिंह चौहान, सहायक प्रबंधक (प्रापण)–द्वितीय, श्री कुलदीप सिंह, अभियंता प्रशिक्षु (परिकल्प–विद्युत)–तृतीय रहे। साथ ही श्री आशीष कुमार पटेल, कनि. अभियंता प्रशिक्षु (प्रापण) एवं श्री मोहित प्रशांत, अभियंता प्रशिक्षु (परि.–विद्युत) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

11 सितंबर, 2024 को आयोजित हुई नोटिंग-ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता में श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (कारपोरेट नियोजन)–प्रथम, सुश्री शुभांशि मणि त्रिपाठी, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–स्थापना)–द्वितीय, श्री अभिषेक तिवारी, जनसंपर्क अधिकारी (केंद्रीय संचार)–तृतीय रहे। साथ ही श्री भुवनेश परमार, सहायक प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत) एवं श्री ऋतेश शर्मा, उप प्रबंधक (ओएमएस) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

12 सितंबर, 2024 को आयोजित हुई अनुवाद प्रतियोगिता में श्री ऋतेश शर्मा, उप प्रबंधक (ओएमएस)–प्रथम, श्रीमती सरला डबराल, सहायक प्रबंधक (औषद्यालय)–द्वितीय, श्री श्रीकांत पंत, वरि. प्रबंधक (परिकल्प विद्युत)–तृतीय रहे। साथ ही श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (कारपोरेट नियोजन) एवं श्री अभिषेक तिवारी, जनसंपर्क अधिकारी (केंद्रीय संचार) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

16 सितंबर, 2024 को आयोजित हुई सुलेख प्रतियोगिता में श्री प्रदीप जैसाली, सहायक (सामाजिक एवं पर्यावरण)–प्रथम, सुश्री उमा चौधरी, अभियंता (परिकल्प विद्युत)–द्वितीय, श्रीमती मंजु तिवाड़ी, कनि. अधिकारी (सतर्कता)–तृतीय रहे। श्री गोविंद राज, कनि. अधिकारी (मा.सं. एवं प्रशा.) एवं श्री जितेंद्र जोशी, वरि. प्रबंधक (प्रशासन एवं प्रोटोकॉल) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

17 सितंबर, 2024 को आयोजित हुई हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता में श्रीमती अमिता रस्तोगी, अधिकारी (ओएमएस)–प्रथम, सुश्री शालिनी प्रिया, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–भर्ती)–द्वितीय, श्रीमती रश्मि बडोनी, प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)–तृतीय रहे। श्री देवेन्द्र सिंह वर्मा, उप प्रबंधक (सेवाएं–संचार) एवं श्री कुलदीप सिंह, कार्यपालक (ईएमडी) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह, साथ में मुख्य महाप्रबंधक (कारपोरेट नियोजन / एमपीएस), श्री ए.के. घिल्डियाल एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिकल्प–विद्युत), श्री आर. आर. सेमवाल

18 सितंबर, 2024 को कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई-मेल प्रतियोगिता में सुश्री शुभांशि मणि त्रिपाठी, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–स्थापना)–प्रथम, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (कारपोरेट नियोजन)–द्वितीय, श्री जी. एस. चौहान, उप महाप्रबंधक (सतर्कता)–तृतीय रहे। साथ ही श्री प्रदीप घिल्डियाल, सहायक प्रबंधक (सामा. एवं पर्या.) एवं श्रीमती रश्मि बडोनी, प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

18 सितंबर, 2024 को ही गैर-कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई-मेल प्रतियोगिता में श्री गबर सिंह बागड़ी, सहायक (ओएमएस)–प्रथम, श्री अनुपम गोयल, सहायक (मा.सं. एवं प्रशा.)–द्वितीय, श्री खीम सिंह बिष्ट, कनि. अधिकारी (मा.सं.–नीति)–तृतीय रहे। साथ ही श्री गंभीर गुनसोला, प्रारूपकार (परिकल्प–सिविल) एवं श्री प्रदीप जैसाली, सहायक (सर्विसेज) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

19 सितंबर, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लि. के कारपोरेट कार्यालय एवं नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के प्रतिनिधियों के लिए आयोजित हुई राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में श्री विजय भाटिया, बीएचईएल, हरिद्वार–प्रथम, श्री संदीप कुमार रावत, अभियंता, टीएचडीसी–द्वितीय, श्री राहुल सक्सेना, आईआईटी, रुड़की–तृतीय रहे। श्री राहुल कुमार दुबे, आईआईटी, रुड़की एवं श्री भूपेन्द्र कुमार यादव, कनि. अभियंता, टीएचडीसी इंडिया लि. ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

20 सितंबर, 2024 को आयोजित हुई वाद-विवाद प्रतियोगिता में डॉ. अभिज्ञान बहुगुणा, जीडीएमओ (औषद्यालय)–प्रथम, श्री दिलेर सिंह, कनि. अभियंता (सेवाएं–विद्युत)–द्वितीय, श्री अभिषेक तिवारी, जनसंपर्क अधिकारी (केंद्रीय संचार)–तृतीय रहे। साथ ही श्री गौरव मौर्य, कनि. अभियंता (विधि एवं माध्यस्थम) एवं श्री जितेन्द्र जोशी, वरि. प्रबंधक (प्रशासन–प्रोटोकॉल) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी में सर्वाधिक कामकाज पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना) को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह

वर्ष 2023-24 के दौरान विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों के द्वारा हिंदी में सर्वाधिक कामकाज पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–स्थापना)–प्रथम, श्री सतीश आर्य, उप मुख्य सतर्कता अधिकारी (सतर्कता)–द्वितीय एवं श्री ए. एल. संतोष कुमार, उप महाप्रबंधक (मा.सं. नीति)–तृतीय रहे।

हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले विभागाध्यक्षों में हिंदी भाषी श्रेणी में श्री मुकेश वर्मा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–भर्ती)–प्रथम एवं श्री एस.के. चौहान, अपर महाप्रबंधक (आर.एंड.डी)–द्वितीय रहे। हिंदीतर भाषी श्रेणी में श्री नटराजन कृष्णा, अपर महाप्रबंधक (परि.–सिविल)–प्रथम एवं श्री ए. एल. संतोष कुमार, उप महाप्रबंधक (मा.सं. नीति)–द्वितीय रहे।

मूल रूप से हिंदी में सर्वाधिक टिप्पण एवं आलेखन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों में श्री शिव प्रसाद व्यास, सहायक प्रबंधक (मा. सं.–स्थापना) एवं श्री एस. एस. रांगड़, अधिकारी (विधि एवं माध्य.)–प्रथम (02), श्री खीम सिंह बिष्ट, कनि. अधिकारी (मा.सं.–नीति), श्रीमती नेहा सिसिंगी, प्रबंधक (मा.सं.–नीति) एवं श्री वडलाकोंडा श्रीतेजा, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–नीति)–द्वितीय (03) तथा सुश्री काजल परमार, सहायक प्रबंधक (केन्द्रीय संचार) श्री विनोद प्रसाद किमोठी, वरि. प्रबंधक (ओ.एम.एस.), श्री राजीव सिंह नेगी, प्रबंधक (संपदा विभाग), श्री सुनील चंद्रा, अधिकारी (अनु. एवं विकास) एवं श्री पंकज विश्वकर्मा, प्रबंधक (भू विज्ञान एवं भू तकनीकी) ने तृतीय (05) पुरस्कार प्राप्त किया।

हिंदी में मूल रुप से टिप्पण एवं आलेखन पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्री एस.पी. व्यास, सहा. प्रबंधक (मा.सं.–स्थापना) को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह

विभागों में हिंदी का कार्यान्वयन देख रहे हिंदी नोडल अधिकारियों को भी उनके सराहनीय योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया। इस योजनांतर्गत श्री श्रीकांत पंत, वरि. प्रबंधक (परिकल्प–विद्युत), श्री युद्धवीर सिंह, वरि. प्रबंधक (परिकल्प–सिविल), श्री देवेश बंगवाल, उप प्रबंधक (मा.सं.–भर्ती), श्री आर.डी. रतूड़ी, उप प्रबंधक (कंपनी सचिवालय), श्री एस.पी. व्यास, सहायक प्रबंधक (मा.सं.–स्थापना), श्रीमती प्रियंका वर्मा, उप प्रबंधक (मा.सं.–नीति), श्री चितरंजन बेहरा, प्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री आर.पी.रतूड़ी, वरि. प्रबंधक (एम.पी.एस.), श्री सुरेश प्रसाद, उप प्रबंधक (प्रापण) एवं श्री शुभम चौबे, सहायक प्रबंधक (मा.सं.वि.) को पुरस्कृत किया गया।

अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी योजना के अंतर्गत मा.सं.–स्थापना अनुभाग को शील्ड प्रदान करते निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह

टीएचडीसी की हिंदी गृह पत्रिका 'पहल' के वर्ष 2023-24 में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए श्री आशुतोष कुमार आनंद, उप महाप्रबंधक (निदेशक–का. सचिवालय, ऋषिकेश) को उनके लेख ''ग्रीन हाइड्रोजन–भविष्य का ईंधन'' के लिए, श्री आर.पी. रतूड़ी, वरि. प्रबंधक (एम.पी.एस., ऋषिकेश) को उनके लेख ''अच्छे संचार की विशेषताएं'' के लिए, श्रीमती शैला, उप प्रबंधक, (एनसीआर कार्यालय कौशांबी) को उनके लेख ''जी–20 समिट'' के लिए, सुश्री विशालाक्षी मालान, प्रबंधक (एनसीआर कार्यालय कौशांबी) को उनके लेख ''राष्ट्रीय सुरक्षा नीति'' एवं श्रीमती शीला देवी, कनि. अधिकारी (समन्वय कार्यालय, देहरादून) को उनके कहानी ''पहेली का राज'' के लिए पुरस्कृत किया गया।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले **मानव संसाधन-स्थापना विभाग को 2023-24** के लिए अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की गई।

समारोह में निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि यह गर्व का विषय है कि निगम को 14 सितंबर, 2024 को हिंदी दिवस के अवसर पर प्रथम राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार इस बात का प्रमाण है कि टीएचडीसी मानव संसाधन क्षेत्र में उत्कृष्टता की ओर बढ़ रहा है। इसके लिए सभी कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। उन्होंने सभी कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे इस बड़ी उपलब्धि से प्ररित और प्रोत्साहित होकर राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए समर्पित भाव से एकजुट होकर कार्य करें तथा सभी कर्मचारी अपना समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए राजभाषा विभाग के दिशा–निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करें।

समारोह में उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों को संबोधित करते निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह

अंत में उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री एस.बी. प्रसाद ने सभी विभागाध्यक्षों/अनुभागाध्यक्षों एवं हिंदी माह के प्रतिभागियों तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले विभागों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया।

कारपोरेट कार्यालय के कार्यक्रम के अनुसार ही टिहरी, कोटेश्वर, वीपीएचईपी पीपलकोटी, एनसीआर कार्यालय कौशांबी, खुर्जा एसटीपीपी, खुर्जा, अमेलिया कोल माइन, आदि कार्यालयों में भी हिंदी दिवस/सप्ताह एवं हिंदी पखवाड़ा/हिंदी ाुमाह आदि कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किए गए।

टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट

टिहरी एवं कोटेश्वर परियोजना कार्यालय में संयुक्त रूप से 02 सितंबर, 2024 से हिंदी पखवाड़ा का आयोजन प्रारंभ किया गया। इस दौरान कार्यालयों में हिंदी में काम–काज को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा का पुरस्कार वितरण समारोह 08 अक्टूबर, 2024 को आयोजित किया गया। जिसमें श्री एल.पी. जोशी, कार्यपालक निदेशक (टीसी) ने पखवाड़ा के दौरान सम्पन्न हुई हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को अपने कर–कमलों से पुरस्कृत किया। हिंदी में सर्वाधिक काम–काज करने वाले विद्युत विभाग को प्रथम एवं मा.सं. एवं प्रशा. विभाग को द्वितीय तथा ओएंडएम, कोटेश्वर को तृतीय चल राजभाषा ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।

खुर्जा एसटीपीपी

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, खुर्जा परियोजना में 14 सितंबर, 2024 से 28 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, अनुवाद, वाद–विवाद, काव्य–पाठ, हिंदी टंकण, हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं सुलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक ने इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया। इसके अतिरिक्त वर्ष–2023–24 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक काम–काज करने वाले विभाग में मानव संसाधन एवं प्रशासन को अंतर्विभागीय चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की गई।

''आत्म सम्मान मनुष्य के दुर्गुणों को बस में करने की लगाम है।'' – बेकन

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

एनसीआर कौशांबी कार्यालय में 13 सितंबर, 2024 से 27 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, अनुवाद, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्री नीरज वर्मा, मुख्य महाप्रबंधक ने इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

वीपीएचईपी, पीपलकोटी

वीपीएचईपी, पीपलकोटी में 14 सितंबर, 2024 से 30 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, अनुवाद, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में श्री अजय वर्मा, मुख्य महाप्रबंधक ने इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया। मा.सं. एवं प्रशा. विभाग ने चल राजभाषा ट्रॉफी प्राप्त की।

अमेलिया कोल माइन में हिंदी पखवाडा का आयोजन

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, अमेलिया कोल माइन परियोजना में 14 सितंबर, 2024 से 27 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी सुलेख प्रतियोगिता एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी के प्रति प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़ा के समापन के अवसर पर एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री ए. के. शर्मा, ओएसडी एवं श्री राजीव गोविल, महाप्रबंधक (परियोजना) अमेलिया कोल माइन, सिंगरौली द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए तथा अपने सम्बोधन में सभी को राजभाषा हिंदी के प्रगामी एवं प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु प्रेरित किया।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

सितंबर 09, 2024 को कनिष्ठ अभियंता स्तर के कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री एस.बी. प्रसाद, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) सहित अनेक वरि. अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यशाला में श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधान, राजभाषा अधिनियमों एवं नियमों के साथ–साथ राजभाषा विभाग के द्वारा जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम की मदों पर भी जानकारी दी। प्रतिभागियों को अंग्रेजी से हिंदी के शब्दकोष भी वितरित किए गए।

दिसंबर 20, 2024 को नराकास हरिद्वार के तत्वावधान में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सौजन्य से ऋषिकेश एवं पर्वतीय क्षेत्र में स्थित सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए एक संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के सहायक प्रबंधक स्तर के अधिकारियों सहित रेल विकास निगम, एम्स, बीआरओ, सीपीडब्ल्यूडी आदि प्रमुख संस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री एस.बी. प्रसाद, उप महाप्रबंधक की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लि. के श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री संतोष टेलकीकर, सहा. प्रबंधक (राजभाषा) ने व्याख्यान दिया।

टिहरी एवं कोटेश्वर यूनिट

सितंबर 30, 2024 को टिहरी एवं कोटेश्वर के अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन, श्री डी. पी. पात्रो एवं मुख्य संकाय सदस्य, डॉ. संजीव नेगी का स्वागत किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन, श्री डी.पी. पात्रो एवं मुख्य संकाय सदस्य, डॉ. संजीव नेगी, श्री इंद्र राम नेगी, श्री आर.डी. ममगाईं एवं वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

दिनांक 04 दिसंबर, 2024 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में टिहरी एवं कोटेश्वर में स्थित अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का संयुक्त रूप से आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन, श्री डी.पी. पात्रो ने की। मुख्य संकाय सदस्य के रूप में डॉ. सुशील कुमार कोटनाला, प्रभारी प्रधानाचार्य, रा.ई.का. ढुंगीधार, टिहरी गढ़वाल उपस्थित रहें। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में डॉ. कोटनाला एवं श्री इन्द्रराम नेगी ने अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया गया।

खुर्जा एसटीपीपी

खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में 21 सितंबर, 2024 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री कुमार शरद, कार्यपालक निदेशक (परियोजना) ने आमंत्रित वक्ता श्री प्रेम सिंह, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा विभाग) को प्लांटर भेंट कर सम्मानित किया। कार्यशाला में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित जानकारी से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया गया। इस अवसर पर श्री अमरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, उप महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) सहित अनेक वरि. अधिकारी उपस्थित रहें।

खुर्जा एसटीपीपी कार्यालय में दिनांक 21 दिसंबर, 2024 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री आर.एम. दुबे, महाप्रबंधक (विद्युत) ने आमंत्रित वक्ता श्री प्रेम सिंह, पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा विभाग) को शॉल भेंट कर सम्मानित किया। कार्यशाला को दो सत्रों में संचालित किया गया। प्रथम सत्र में प्रतिभागियों को राजभाषा नीति की विस्तृत जानकारी दी गई तथा द्वितीय सत्र में प्रतिभागियों को हिंदी तिमाही रिपोर्ट भरने की जानकारी से लाभान्वित किया गया। इस अवसर पर श्री अमरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों का धन्यवाद व्यक्त किया।

वीपीएचईपी, पीपलकोटी

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, वीपीएचईपी, पीपलकोटी में दिनांक 17 दिसंबर, 2024 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) श्री अजय वर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। श्री अजय वर्मा, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) ने कार्यशाला के मुख्य संकाय सदस्य/वक्ता डॉ. दिगपाल सिंह, सहायक प्रोफेसर (हिंदी), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर का शॉल भेंट कर स्वागत किया। कार्यशाला में वरिष्ठ कार्यपालकों ने प्रतिभागिता की। संकाय सदस्य द्वारा प्रतिभागियों को हिंदी भाषा परिचय, राजभाषा कार्यान्वयन तथा हिंदी भाषा के व्यवहारिक आयाम के बारे में विस्तार से बताया गया एवं चर्चा की गई।

कारपोरेट कार्यालय में हिंदी हास्य व्यंग्य प्रतियोगिता का आयोजन

हिंदी में कार्य करने की अभिरूचि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कारपोरेट कार्यालय में 16 दिसंबर, 2024 को हिंदी हास्य व्यंग्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में टीएचडीसी के नियमित रूप से कार्यरत कर्मचारियों के साथ–साथ संविदाकर्मियों एवं अप्रैंटिस कर्मचारियों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. ए. एन. त्रिपाठी, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने की। इस अवसर पर ऋषिकेश के राजकीय इंटर कॉलेज के अध्यापक, श्री मनोज गुप्ता एवं वरि. पत्रकार, कवि एवं साहित्यकार डॉ. धीरेन्द्र रांगड ने निर्णायक की भूमिका निभाई। डॉ. ए. एन. त्रिपाठी, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) के कर–कमलों से विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

नराकास हरिद्वार की 38वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 38वीं अर्धवार्षिक बैठक राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, रुड़की में जल तरंग सभागार में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष एवं टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह ने की। बैठक में हरिद्वार, रूड़की, ऋषिकेश एवं पर्वतीय क्षेत्र में स्थित केंद्र सरकार के प्रतिष्ठित सदस्य संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों एवं राजभाषा अधिकारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

नराकास की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह

कार्यक्रम में सर्वप्रथम समिति के अध्यक्ष, श्री शैलेन्द्र सिंह, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक, श्री छबिल कुमार मेहेर, राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के निदेशक, श्री मनमोहन कुमार गोयल, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की के निदेशक, प्रो. कमल किशोर पंत, सीबीआरआई रुड़की के निदेशक, श्री आर. प्रदीप कुमार, बीएचईएल हरिद्वार के कार्यपालक निदेशक, श्री टी. एस. मुरली एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंचासीन अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के अधिकारियों के द्वारा जल स्तुति गायन प्रस्तुत किया गया तथा 'हिंदी, भारत मां की बिंदी' गीत की वीडियो प्रस्तुति दी गई। राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के निदेशक, श्री मनमोहन कुमार गोयल ने स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया।

बैठक में समिति के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की। उन्होंने छमाही के दौरान समिति के तत्वावधान में आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी दी तथा राजभाषा से संबंधित नवीनतम जानकारियों से अवगत कराया। इस अवसर पर नराकास के तत्वावधान में केनरा बैंक एवं भारतीय स्टेट बैंक के सौजन्य से सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई प्रतियोगिताओं में विजेता रहे कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। माननीय अध्यक्ष, श्री शैलेन्द्र सिंह के साथ मंचासीन अतिथिगणों ने अपने कर–कमलों से प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

मंचासीन अतिथिगणों के द्वारा छमाही के दौरान प्रकाशित की गई समिति की वार्षिक पत्रिका "ज्ञान प्रकाश" के विमोचन के साथ ही राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान की पत्रिका "जल चेतना" के जुलाई, 2024 अंक एवं टीएचडीसी की छमाही राजभाषा पत्रिका **"पहल"** के जून, 2024 अंक का विमोचन भी किया गया। राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के अधिकारियों के द्वारा संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन पर एक प्रस्तुतीकरण दिया गया। बैठक में चर्चा सत्र का आयोजन किया गया जिसमें सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधियों ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए।

नराकास की राजभाषा पत्रिका ज्ञान प्रकाश का विमोचन करते अध्यक्ष एवं निदेशक (कार्मिक), श्री शैलेन्द्र सिंह तथा उपस्थित अधिकारीगण

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक, श्री छबिल कुमार मेहेर ने सदस्य संस्थानों से प्राप्त अर्धवार्षिक रिपोर्टों की समीक्षा की तथा संस्थानों से रिपोर्टों में तथ्यपरक आंकड़े भरने का अनुरोध किया। उन्होंने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के प्रयोग से संबंधित अनेक नवीनतम जानकारियों से भी अवगत कराया। बैठक में बीएचईएल, हरिद्वार के कार्यपालक निदेशक, श्री टी. एस. मुरली, सीबीआरआई रुड़की के निदेशक, प्रो. आर. प्रदीप कुमार एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक, श्री कमल किशोर पंत ने सभा को संबोधित करते हुए संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन सुदृढ़ करने पर जोर दिया।

श्री शैलेन्द्र सिंह, निदेशक (कार्मिक), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने अपने संबोधन में नराकास के संचालन में सहयोग करने वाले सभी संस्थानों के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि अगली छमाही में आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में अपने अधिकाधिक साथियों को भी भाग लेने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि हम स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने उन साथियों को हमेशा याद करते हैं जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ निछावर कर दिया। उनके साथ–साथ हमें ऐसे साहित्यकारों, रचनाकारों को भी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने अपने साहित्य एवं काव्य के माध्यम से देश के युवा लोगों के हृदय में स्वतंत्रता की चाह का बीज अंकुरित किया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम में पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने में हिंदी ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई क्योंकि हिंदी को पूरे देश में समझा जाता था। इसी को ध्यान में रखते हुए संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसकी याद में प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है। उन्होंने सभी संस्थानों से अनुरोध किया कि अगले माह यानि सितंबर में अपने–अपने कार्यालय में इस दिन को धूमधाम से मनाएं। उन्होंने हिंदी भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि हिंदी का विस्तार 130 देशों में हो चुका है। यह फिजी की राजभाषा भी है तथा मारीशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में यह क्षेत्रीय भाषा के रूप में स्थापित हो रही है। इसलिए हमें इस पर गर्व करना चाहिए तथा अपना सरकारी कामकाज हिंदी में ही करने पर जोर देना चाहिए।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की 27वीं अर्धवार्षिक बैठक संपन्न

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी, की 27वीं अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 26.07.2024 को डॉ. ए. एन. त्रिपाठी महाप्रबंधक (मा.सं. एवं. प्रशा.) की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पर राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. छबिल कुमार मेहेर भी उपस्थित थे। तत्पश्चात महाप्रबंधक, मानव ससांधन एवं प्रशासन (प्रभारी सचिवालय, नराकास), डॉ. ए. एन. त्रिपाठी ने सभी उपस्थित सदस्यों/प्रतिनिधि सदस्यों का हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया।

उन्होंने कहा कि हम सभी के कार्यालय 'क' क्षेत्र में आते है, इसलिए हमें शत–प्रतिशत कार्य हिंदी में करना आवश्यक है। इस बैठक में नराकास के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंकों एवं सार्वजानिक क्षेत्र के उपक्रमों/स्वायत निकायों के प्रमुख/प्रतिनिधि सदस्य के रूप में उपस्थित हुए जिनकी संख्या लगभग 27 थी। नराकास के तत्वावधान में आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। बैठक की कार्यवाही को आगे बढ़ाते हुए सचिव, नराकास श्री इन्द्र राम नेगी ने बैठक में नराकास, टिहरी के विभिन्न गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी तथा उन्होंने कहा कि बैठक में 33 सदस्य कार्यालयों में से कुल 19 सदस्य कार्यालयों ने ही अपनी अर्धवार्षिक रिपार्ट प्रस्तुत की है। सहायक प्रबंधक (राजभाषा), सुश्री बानी शुक्ला के पावर पॉइंट प्रदर्शन के दौरान राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3), राजभाषा नियम, 5, हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी, हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण एवं कंप्यूटर में यूनिकोड प्रणाली आदि पर विस्तार से चर्चा की गई तथा सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट में पाई गई खामियों से अवगत कराते हुए सचिव नराकास,

श्री इन्द्र राम नेगी तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन), डॉ. छबिल कुमार मेहेर द्वारा सदस्य कार्यालयों को छमाही रिपोर्ट गंभीरता से भरने की सलाह दी, तथा दिसंबर में नराकास की दूसरी अर्धवार्षिक बैठक से पहले कार्यालयों के निरीक्षण का आदेश दिया गया। बैठक की अध्यक्षता कर रहे महाप्रबंधक डॉ. ए.एन. त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में बताया कि नराकास की अपनी सीमाएं है तथा सभी अधीनस्थ कार्यालयों के प्रमुखों/सदस्यों के सहयोग एवं समन्वय से नराकास की गतिविधियों को चरम सीमा तक ले जाया जा सकता है। राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने हमें जो उत्तरदायित्व सौंपा है उसे हम अपने स्तर से तथा आप सबके सहयोग से पूरा कर पा रहे हैं। विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने हेतु हम हमेशा तत्पर हैं। उन्होंने नराकास में सदस्य सस्थानों की कम उपस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की, और सभी को निर्देश दिया कि प्रत्येक बैठकों में सभी सदस्यों/प्रतिनिधियों को उपस्थित रहना आवश्यक है।

हास-परिहास

शादी के बाद पहली बार,
बहू रेसिपी बुक देखकर खाना बना रही थी–
सास (फ्रिज खोलती है):
अरे बहू ये मंदिर का घंटा फ्रिज में क्यों रखा है?
बहू: मम्मी जी बुक में लिखा है कि सब चीजों को मिलाकर
एक घंटा फ्रिज में रखें
सास बेहोश.......

पप्पू:– क्या तुमको पता है कि मंदिर में पुरूष ही पुजारी क्यों होते है?
चप्पू:– नही यार तुम ही बता दो
गप्पू:– मुझे पता है मैं बताता हूँ
ताकि, लोग केवल भगवान पर ध्यान दे सकें।

पति:– आज खाने में क्या बना रही हो?
पत्नी:– आलू की सब्जी बना रही हूँ। पर मुझे ये समझ नहीं आ रहा है कि आलू अभी तक पके क्यों नही!
पति:– तो तुम ऐसा क्यों नही करती.......
पत्नी:– क्या करूं?
पति:– तुम थोड़ी देर आलू से बाते करके देखो, शायद पक जाएं।

गोलू जैसे ही कॉलेज में पहुँचा तो
खुशी के मारे उछलने लगा....!
दोस्त:– क्या हुआ, इतना खुश कैसे हो?
गोलू:– आज पहली बार मुझसे किसी लड़की ने मेट्रो में बात की!
दोस्त:– वाह भाई, क्या बातें हुई?
गोलू:– मैं बैठा था, वो बोली उठो ये लेड़ीज सीट है!

मरीज (डॉक्टर से)– डॉक्टर साहब आपने जो पर्ची के पीछे दवाई लिखी थी, वो पूरे शहर में कहीं नहीं मिल रही...
डॉक्टर– अरे भाई, वो तो मैं अपना पेन चलाकर चेक कर रहा था....

एक नए टीचर ने क्लास से पूछा:–
भारत के एक महान वैज्ञानिक का नाम बताओ?
स्टूडेंट:– सर, अलिया भट्ट....
टीचर:– छड़ी लेकर......यही सीखे हो?
दूसरा:– ये तोतला है सर.....आर्यभट्ट बोल रहा है

टीचर क्लास में गणित पढ़ा रहा था।
टीचर:– बोर्ड में 55 लिखो।
पप्पू:– सर कैसे लिखते हैं?
टीचर:– 5 लिखो फिर उसके साइड में एक और 5 लिखो।
पप्पू ने बोर्ड में 5 लिखा और रूक गया।
टीचर:– अरे क्या हुआ, रूक क्यों गये?
पप्पू:– सर दूसरा 5 किस साइड लिखूं समझ नहीं आ रहा है।

पत्नी:– सुनो जी, आज से तुम रोजाना शराब पिया करो......
पति:– क्यों?
पत्नी:– क्योंकि, आप नशे में ज्यादा काम करते हो....
पति:– मैं कुछ समझा नहीं?
पत्नी:– अरे कल तुम शराब पीकर आए तो नशे में सारे गंदे पड़े बर्तन धो डाले, और तो और आपने मेरे पाँव भी दबाए.....

पप्पू ने जैसे ही कार में बैठकर सीट बेल्ट बांधनी चाही,
उदासी भरी आवाज़ में उसकी पत्नी बोली....
मेरे करवा चौथ व्रत पर विश्वास नहीं है आपको.......

पप्पू:– माँ सारे खिलौने बेड के नीचे छिपा दो......
पप्पू की माँ:– क्यों?
पप्पू:– क्योंकि मेरा दोस्त डब्बू आ रहा है....
पप्पू की माँ:– डब्बू खिलौने चुरा लेगा क्या.....?
पप्पू:– नहीं, वह अपने खिलौने पहचान लेगा।

डॉक्टर:– चश्मा किसके लिए बनवाना है?
बब्लू:– टीचर के लिए
डॉक्टर:– पर क्यों?
बब्लू:– क्योंकि उन्हें मैं हमेशा गधा ही नज़र आता हूँ।

लड़की अपने ब्वायफ्रेंड को अपनी मम्मी से मिलवाने ले गई.....
दूसरे दिन......
गर्लफ्रेंड:– मेरी मम्मी को तुम बहुत पसंद आए।
ब्वायफ्रेंड:– चल पगली...... कुछ भी हो....... मैं शादी तो तुमसे ही करूंगा.......
मम्मी से बोलना मुझे भूल जाए.......

अगर कोई सुबह–सुबह उठने में नखरें दिखाए तो
बस एक तरीका आजमाना, वह अपने आप उठ जाएगा,
उसके कान में जाकर धीरे से कह दो.....
तेरे पापा तेरा मोबाइल चेक कर रहे हैं!

दुकानदार:– बहन जी आप दुकान पर आती हैं, गहने देखती हैं पर कुछ लेती क्यों नहीं?
कस्टमर:– हमेशा लेती हूँ पर आप ध्यान नहीं देते..........

''कोई भी देश अपनी अच्छाईयों को खो देने पर पतित हो जाता है।'' - गुरु नानक

साहित्यकार परिचय

मुंशी प्रेमचंद

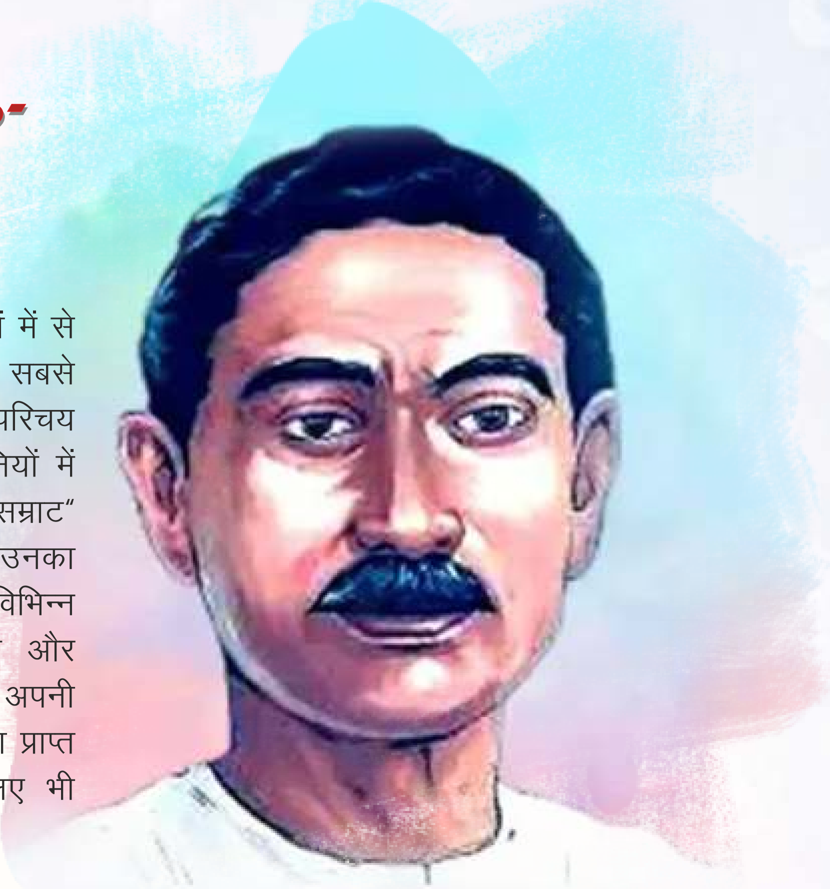

मुंशी प्रेमचंद को हिंदी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है और वे इस क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण हस्तियों में से भी एक थे। प्रेमचंद का जीवन परिचय एक प्रेरणादायक साहित्यिक यात्रा है। अपनी कहानियों में भारतीय समाज के चित्रण के लिए उन्हें "उपन्यास सम्राट" और "हिंदी साहित्य का मुर्शिद" भी कहा जाता है। उनका साहित्य न केवल मनोरंजन करता है बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं, खासकर ग्रामीण जीवन, गरीबी, शोषण और सामाजिक मुद्दों पर भी प्रकाश डालता है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से न केवल साहित्यिक उत्कृष्टता प्राप्त की, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और सुधार के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रेमचंद का पूरा नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, इनका जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के पास एक छोटे से गाँव में हुआ था। उनका बचपन बेहद गरीबी से भरा हुआ था। पिता का जल्दी निधन हो जाने के बाद प्रेमचंद को कम उम्र में ही स्कूल छोड़ना पड़ा और परिवार को चलाने के लिए काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने गरीबी और लोगों के बर्ताव को करीब से देखा, जिसने उनके अंदर के लेखक को आकार देने में प्रमुख भूमिका अदा की। प्रेमचंद को जल्द ही ऐसा महसूस हुआ कि हिंदी लोगों तक उनकी बात पहुंचाने के लिए उन्हें हिंदी में लिखना जरूरी है। इसलिए 1910 से उन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया और तबसे वह अपने कलम नाम 'प्रेमचंद' को अपने हिंदी साहित्य पर लिखने लगे ।

मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास: सेवासदन, गोदान, कर्मभूमि, निर्मला, रूठी रानी, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा, गबन, मगलसूत्र (अधूरा)

मुंशी प्रेमचंद के नाटक: संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी

मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ: अंधेर, अनाथ लड़की, अपनी करनी, अमृत, अलग्योझा, आखिरी तोहफा, आखिरी मंजिल, आत्म संगीत, क्रिकेट मैच, कवच, कातिल, कोई दुख न हो तो बकरी खरीद ला, कौशल, खुदी, गैरत की कटार, आत्मसंगीत, आत्माराम, दो बैलों की कथा, आल्हा, इज्जत का खून, इस्तीफा, गुल्ली डंडा, घमंड का पुतला, ज्योति, जेल, जुलूस, इस्तीफा, ईदगाह, ईश्वरीय न्याय, उद्धार, एक आंच की कसर, झांकी, ठाकुर का कुआं, तेंतर, त्रिया चरित्र, एक आंच की कसर, तांगे वाले की बड़, एक्ट्रेस, तिशूल, दंड, दुर्गा का मंदिर, कप्तान साहब, कर्मों का फल, कफन, पूस की रात आदि।

मैथलीशरण गुप्त

(03 अगस्त, 1886 – 12 दिसम्बर, 1964)

तप्त हृदय को, सरस स्नेह से,
जो सहला दे, मित्र वही है।

रूखे मन को, सराबोर कर,
जो नहला दे, मित्र वही है।

प्रिय वियोग, संतप्त चित्त को,
जो बहला दे, मित्र वही है।

अश्रु बूँद की, एक झलक से,
जो दहला दे, मित्र वही है।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाषः 0135–2473614, वेबसाइटः http:// thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

Contad